ISBN: 978-93-342-3604-0

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: भारत उदय गुरुकुल का शैक्षिक योगदान



- डॉ० राजीव अग्रवाल
- संग्राम साहू
- सविता देवी

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: भारत उदय गुरुकुल का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

एसोसिएट प्रोफेसर- शिक्षा संकाय

अतर्रा पी० जी० कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

संग्राम साहू

एम०कॉम०, एम०एड०

सविता देवी

बी०एस-सी०, बी०एड०

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: भारत उदय गुरुकुल का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल

संग्राम साहू

सविता देवी

E- book संस्करण: 2024

मूल्य: ₹ 82

ISBN: 978-93-342-3604-0

प्रकाशक-

सविता देवी

ग्राम एवं पोस्ट- नौहाई, तहसील- नरैनी, जिला- बाँदा (उत्तर प्रदेश)- 210129

Mob- 6390977191

E-mail: savitadevi8500@gmail.com

प्राक्कथन

भारतवर्ष की पावन भूमि पर सदैव संत महात्माओं, ऋषियों, महायोगियों, धर्मा, महापुरुषों का अवतरण होता रहा है। यहां पर धार्मिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा भारतीय संस्कृति की आधारशिला रही है।

धार्मिक शिक्षा से लोगों में संस्कार उत्पन्न होते हैं और संस्कृति हमारी चेतना को परिष्कृत करती है।

वर्तमान समाज में देश के तथा कथित जागरूक लोग पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर मैकाले शिक्षण पद्धति की ओर भाग रहे हैं, जिसमें सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिकता का कोई स्थान नहीं है। जबकि प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा में सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय चरित्र एवं संवेदनाओं के लिए पर्याप्त स्थान है, जिसका उद्देश्य तत्कालीन समाज में चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन, व्यावहारिक व सामाजिक जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति एवं भावी पीढ़ी के नवनिर्माण में निहित है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु मैकाले शिक्षा पद्धति के विरुद्ध एक अभियान की तरह आधुनिकता को प्राचीन संस्कृति को साथ लेकर चलने का प्रयास भारत उदय गुरुकुल द्वारा किया जा रहा है। वर्तमान शिक्षण पद्धति की कमियों के दृष्टिगत इसकी महती आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक का शीर्षक **"शिक्षा में अभिनव प्रयोगः भारत उदय गुरुकुल का शैक्षिक योगदान"** है। इस पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में अध्ययन परिचय के अंतर्गत भारत में शिक्षा का विकास एवं समस्याएं, शिक्षा के क्षेत्र में धर्म गुरुओं एवं स्वयंसेवी संगठनों का योगदान, समस्या कथन में

प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमन, एवं शोध विधि पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में शैक्षिक योगदान से सम्बंधित कतिपय पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों की समीक्षा की गयी है।

तृतीय अध्याय में भारत उदय गुरुकुल के संस्थापक का परिचय एवं दर्शन प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भारत उदय गुरुकुल के परिचयात्मक विवरण का उल्लेख किया गया है।

पंचम अध्याय में भारत उदय गुरुकुल की विशेषताओं के बारे में विस्तार से वर्णन किया गया है।

षष्ठ अध्याय में अध्ययन के निष्कर्ष, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव एवं भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है जब तक कि वह जनसामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक विद्यालय से सम्बन्धित विभिन्न घटकों में प्रेरणा का संचार करने में निश्चय ही सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लेखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वभाविक है। अतः यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो हम अत्यन्त आभारी होंगे तथा भावी संस्करण में संशोधन का प्रयास करेंगे।

05/03/2025

डॉ. राजीव अग्रवाल

संग्राम साहू

सविता देवी

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय:अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 अध्ययन का औचित्य

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 अध्ययन विधि

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

प्रथम अध्याय

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

मानव को मानवीय गुणों से सुशोभित करने के समस्त संसाधनों में शिक्षा सर्वोत्तम साधन है वह व्यक्ति में व्यवहारिकता एवं आदर्श का सुंदर समन्वय करती है परंतु वर्तमान में प्रचलित शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षा के मूल भावों से भटक कर पश्चात शिक्षा जगत एवं प्रणाली को अपना रही है आज के तथाकथित शिक्षित एवं विद्वान भारतीय संस्कृति के मूल भावनाओं को नहीं समझ पा रहे हैं जब अपनी शिक्षा प्रणाली में हम भारतीय दर्शन संस्कृति एवं भारतीय विद्वानों के शैक्षिक विचारों को कोई स्थान नहीं देते तो भारत की शिक्षा उन्हें उच्च आदर्शो से प्रमाणित कैसे हो सकती है जो भारत को भारत बनती है।

आज की शिक्षा को केवल ज्ञान देने का साधन ही माना जा रहा है। परंतु शिक्षा जब तक के जीवन के मूल्यों आदर्शों एवं मान्यताओं का परिचय नहीं देती तब तक वह शिक्षा नहीं कहीं जा सकती इस संबंध में महान विचारक डॉक्टर राधाकृष्णन जी ने कहा है शिक्षा सूचना प्रदान करने एवं कौशलों का प्रशिक्षण देने तक सीमित नहीं है इसे शिक्षित व्यक्ति को मूल्य व विचार भी प्रदान करना है वैज्ञानिक एवं तकनीकी व्यक्ति भी नागरिक है आता है जिस समुदाय में वह रहते हैं उसे समुदाय के प्रति भी उनका सामाजिक उत्तरदायित्व है।

आज भारत में पहले सामाजिक बुराइयों नैतिकता का ह्रास, अनुशासनहीनता मूल्य का ह्रास, आज समस्याओं का हाल हमारी व्यवस्था में सुधार लाकर ही किया जा सकता है। इसके लिए शिक्षा प्रणाली में भारत की जनता की आवश्यकता एवं आकांक्षा के अनुरूप बदलाव लाना होगा हमारी भारतीय आर्य परंपरा में विद्या प्राप्त की मुख्य व्यवस्था के रूप में गुरुकुल एवं गुरुकुल केंद्र स्थान पर थे आज से 2 वर्ष पहले तक जिस प्रकार की उत्तम शिक्षा भारत में दी जाती थी वैसी विश्व के किसी भी देश में नहीं दी जाती थी अंग्रेजों के आगमन से पहले शिक्षा और विद्या के क्षेत्र में भारत दुनिया के देशों में सबसे अग्रणी था मनुष्य के आंतरिक गुना को उजागर करके उसके देशों का निर्माण करने वाली महान भारतीय शिक्षा प्रणाली को विदेशी आक्रमणों का कुठाराघात सहना पड़ा।

ध्वस्त हुई प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्र द्वारा संभव है अतः इस परंपरा को पुनः प्रतिस्थापित करना अति आवश्यक है तभी मैकाले शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई है उसे हम भारत को बचा पाएंगे।

1.1.1 शिक्षा : विकास की प्रक्रिया

शिक्षा विकास की प्रक्रिया है जिसमें समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निकली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तानांतरण का प्रयास करता है इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों व्यवस्थाओं समाज के प्रतिमान एवं मूल्यों को सीखना है बच्चा समझ से तभी जुड़ पता है जब वह उसे समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

शिक्षा मानव के एक अच्छा इंसान बनाती है तथा व्यक्ति की अंतर्निहित क्षमता तथा उसके व्यक्तित्व को विकसित करने वाली प्रक्रिया है यह प्रक्रिया उसे समझ में एक व्यक्ति की भूमिका निभाने के लिए सामाजिक कृत करती है तथा समाज के सदस्य एवं एक जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए व्यक्ति को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल उपलब्ध कराती है शिक्षा शब्द का अर्थ होता है सीखने सीखने को क्रिया।

शिक्षा एक सापेक्ष चेतन अथवा चेतन मनोवैज्ञानिक सामाजिक वैज्ञानिक एवं दार्शनिक वातावरण संबंधी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व संबंधी सभी अंगों का विकास इस प्रकार से होना चाहिए कि वह परिवर्तन विरोधी तथा रचनात्मक साधनों के द्वारा सच्चा सुख और आनंद प्राप्त कर सके वास्तव में शिक्षा वातावरण संबंधी सुविचार प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानव का विकास तथा समाज का कल्याण होना चाहिए रिमोट ने भी शिक्षा को विकास की सचेतन तथा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया माना है जिसके द्वारा मनुष्य आध्यात्मिक भौतिक तथा सामाजिक आदि सभी प्रकार के विभिन्न वातावरणों से समायोजन प्राप्त करना सीख जाये।

1.1.2 वैदिक कालीन शिक्षा

लगभग 2500 ईसा पूर्व से 500 इस पर्व का समय वैदिक काल कहा जाता है वैदिक काल में शिक्षा का प्रारंभ नागरिक वेद के रचनाकार लगभग 25 से इस अपूर्व से माना जाता है कुछ इतिहास का इसे ब्राह्मण

कल की संज्ञा देते हैं क्योंकि इस काल में शिक्षा एवं सामाजिक व्यवस्था पर ब्राह्मणों का एकमात्र आधिपत्य था।

वैदिक काल में शिक्षा से आगरा वेद कालीन शिक्षा से है क्योंकि वैदिक काल बोलते हैं वेदों पर आधारित होता था इस कल की शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेद ही एकमात्र स्रोत थे वेदों में शिक्षा शब्द का प्रयोग विद्याज्ञान विनय और दिशा आदि अर्थों में हुआ है शिक्षा को अंतर ज्योति माना जाता था जिसे प्राप्त करके मनुष्य संसार के सभी बंधनों से मुक्त होकर जन्म मरण से छुटकारा प्राप्त करता था अर्थात मोक्ष पा लेता था क्योंकि इस काल में जीवन का मुख्य लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना था।

इस प्रकार वैदिक काल में शिक्षा लौकिक ना होकर आध्यात्मिक थी और परमब्रह्मा का ज्ञान प्राप्त करने का मुख्य साधन थी इस काल में पस्ताकिया ज्ञान प्राप्त करने को शिक्षा नहीं माना जाता था और ना ही शिक्षा को जीवकोपार्जन का साधन वरना शिक्षा को ज्ञान का वह प्रकाश कुंज माना जाता था जो मनुष्य के अज्ञानता रूपी अंधकार को मतकर सर्वांगीण विकास कर सके।

डॉ ए एस अलतेकर ने कहा है-

"वैदिक युग से लेकर आज तक भारत में शिक्षा का मूल तात्पर्य यह रहा है कि शिक्षा प्रकाश का वह स्रोत है जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हमारा सच्चा पथ प्रदर्शन करती है।"

भारत में औपचारिक शिक्षा मंदिरों आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी यह उच्च शिक्षा के केंद्र भी थे विभिन्न धर्म सूत्रों में इस बात का उल्लेख है की माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरु है कुछ विद्वानों ने पिता को बच्चों के श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में स्वीकार किया है जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाएं स्थापित होने लगी वैदिक काल में परिषद शाखा और चरण जैसे संघों को स्थापित कर दिया गया था।

गुरुकुलों की स्थापना प्रायः वनों उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी वनों में गुरुकुल बहुत कम होते थे अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास अध्ययन तथा चिंतन पसंद करते थे वाल्मीकि संदीपनीकांड आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे और उनके यहां दर्शन शास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण ज्योतिष तथा नागरिकशास्त्र भी पढ़ाए जाते थे। अधिकांश गुरुकुल गांव या नगरों के समीप किसी भागा था वाटिका में बनाए जाते थे जिससे उन्हें एकांत एवं पवित्र वातावरण प्राप्त हो सके इससे दो लाभ थे एक तो गृहस्थ आचार्य को समग्र एकत्रित करने में सुविधा थी दूसरे ब्रह्मचारियों को भिक्षाटन में अधिक भटकना नहीं पड़ता

भारत उदय गुरुकुल की चित्रावली परिशिष्ट-II









था मनु के अनुसार ब्रह्मचारों को गुरु के कुल में अपनी जाति वालों में तथा कुल बांधों के यहां से भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए यदि भिक्षा योग दूसरा घर नहीं मिले तो पूर्ण पूर्ण ग्रहण का त्याग करके भिक्षा याचना करना चाहिए इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल गांव के सन्निकट ही होते थे।

स्वजातियों से भिक्षा याचना करने में उनके पक्षपात तथा ब्रह्मचारी के ग्रह की ओर आकर्षण कम भाई भी रहता था इक्वेट स्वजातियों से भिक्षा याचनाका पूर्ण निषेध कर दिया गया था बहुदा राजा तथा सामंतो का प्रोत्साहन प्रकार विद्वान पंडित उनकी सभाओं की ओर आकर्षित होते थे और अधिकतर उनकी राजधानी में ही बस जाते थे जिससे वह नगर शिक्षा के केंद्र बन जाते थे इनमें तथ्य तक्षशिला पाटलिपुत्रकरने को मिथिला धारा तंजौर आदि प्रसिद्ध है इसी प्रकार टेस्ट स्थान की ओर भी विद्वान आकृष्ट होते थे फलता काशी कर्नाटक नासिक आदि शिक्षा के प्रसिद्ध केंद्र बन गए थे गुरुकुलों और आश्रमों से शुरू हुआ शिक्षा का सफर उन्नति करते हुए विश्वविद्यालय में तब्दील होता गया पूरे भारत में प्राचीन काल में 13 बड़े विश्वविद्यालय हो या शिक्षक केन्द्रो की स्थापना हुई।

8वीं शताब्दी से 12वीं शताब्दी के बीच भारत पूरे विश्व में शिक्षा का सबसे बड़ा और प्रसिद्ध केंद्र था गणित ज्योतिष भूगोल चिकित्सा विज्ञान के साथ अन्य विषयों की शिक्षा देने में भारतीय विश्वविद्यालयों के बराबर कोई नहीं था।

1.1.3 वैदिक कालीन गुरुकुल

गुरुकुल का शाब्दिक अर्थ गुरु का कुल अर्थात गुरु का परिवार छात्र गुरु के घर में रहकर जहां शिक्षा प्राप्त करते थे गुरुकुल कहलाते थे गुरुकुलों में सबसे नीचे के छात्र को छोड़कर सब गुरु ही गुरु हुआ करते थे इसलिए उन्हें गुरुकुल कहा जाता था यह गुरुकुल गुरुओं के नाम से प्रसिद्ध थे।

1.1.3.1 स्थिति एवं महत्व

गुरुकुल प्रयाणम बस्तियों के कोलाहल से दूर नदिया सरोवर के निकट के शिवन्या उपमान में हुआ करते थे जहां आश्रम की गाय को एवं समिधा प्राप्त करने विद्याधन व्यायाम एवं धनुर्विद्या का अभ्यास करने ब्रह्मचारियों आदि के निवास के लिए पर्याप्त स्थल एवं स्वच्छ जलवायु उपलब्ध होती थी।

1.1.3.2 प्रवेश

प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत बालक गुरुकुल में प्रवेश के सुयोग हो जाता था विद्या अध्ययन के पूर्व ब्राह्मण क्षत्रिय और वैसे के बालकों का उपनयन संस्कार होता था।

1.1.3.3 उपनयन संस्कार

गुरो: समीपे नयनम - उपनयनम्

(इसका अभिप्राय बालक को शिक्षा ग्रहण करने के लिए गुरु के पास ले जाने से है)

किसी शुभ मुहूर्त में बालक का उपनयन संस्कार करने की परंपरा थी बसंत ऋतु में ब्राह्मण बालक ग्रीष्म ऋतु में क्षत्रिय बालक तथा पतझड़ अर्थात शिशिर ऋतु में वैश्य बालक का उपनयन संस्कार किए जाने का विधान था।

संस्कार संपन्न होने के 1 दिन पूर्व गणेश लक्ष्मी माँ सरस्वती आदि की पूजा की जाती थी तत्पश्चात बालक के बाल बनवाकर स्नान कराया जाता था और कौपीन धारण करने को दिया जाता था। उपनयन के समय गुरुकुल बालक का नाम पूछता था और बालक को उसके वर्णानुसार वस्तुएं प्रदान करता था वस्तुओं को धारण करने के पश्चात छात्र का यज्ञोपवीत संस्कार होता था जिसमें गुरु उन्हें उपदेश देता था। इसके पश्चात बालकों को गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति दी जाती थी।

1.1.3.4 आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली

वर्तमान शिक्षा जिस पर आधुनिकता व भौतिक संसरवाद के लक्ष्य को आधार मानकर युवा पीढ़ी को शिक्षित करने का एक नया दौर जन्म ले चुका है और यही आज की वर्तमान शिक्षा पद्धति का सबसे भयानक रूप है जो आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्तियों तक ही पहुंच कायम लिए हुए हैं। जो आर्थिक रूप से सक्षम नहीं है उनसे वर्तमान शिक्षा कोसों दूर है आज इस बात पर जोर नहीं की मानव को मानव के रूप में तैयार किया जाए बल्कि मानव को मशीन बनाने का प्रयास जोरों पर है यह एक प्रकार से देश की सांस्कृतिक धरोहर को दमन करने का एक ऐसा प्रयास है जिसके परिणाम स्वरुप संस्कृति व संस्कारों के विनाश का ऐसा चक्र चलेगा जो मानव को केवल भौतिक संसाधनों की उपलब्धि ना होकर आध्यात्मिकता एवं जीवन जीना है जो उसके जीवन में शांति एवं आध्यात्मिक सुख को संचालित करता है और उसे उसे परम तत्व का बोध कराता है जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्षों के अपने अथक प्रयास से चीज कर संस्कृति व संस्कारों के रूप में पल्लवित किया

है। आज पाश्चात्य संस्कृति के बहन और काम के प्रभाव ने मानव को अमानुष बनाकर रख दिया है जो इस युग के अंत का परिचायक है।

"सर्वे भवन्तु सुखिन:"

जो हमारे पूर्वजों व धार्मिक ग्रंथो का मूल मंत्र होता था आज यह "सर्व एवं मम" तक संकुचित होकर रह गया है। हजारों वर्षों के प्रयासों के परिणाम स्वरुप हमने जो मित्रों के रूप में धरोहर प्राप्त की और हम आज भी उनके वास्तविक उद्देश्य से परिचित हैं फिर भी न जाने क्यों इस आधुनिकता नमक विश्व ने हमें एक ऐसे अंधकार में कुएं में धकेल दिए हैं जहां से बाहर आप आना मुमकिन ही नहीं नामुमकिन है।

1.1.3.5 उद्देश्य

देश के विकास के लिए मानवीय संसाधनों को विकसित करना आवश्यक होता है मानवीय संसाधनों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही संभोग किया जाता है मानवी संसाधनों के विकास की दृष्टि से आधुनिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है यह एक शक्तिशाली माध्यम है।

आधुनिक कालीन शिक्षा प्रणाली के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत हैं-

प्राचीन मर्यादाओं का सम्मान करते हुए नई मान्यताओं एवं विचारधाराओं के अग्रदूतों को तैयार करना। लोकतांत्रिक आदर्श की सुरक्षा करना तथा व्यक्ति एवं समाज में सामंजस्य स्थापित करना।

सामाजिक कुरीतियों की मुक्ति में सहायता प्रदान करना। सत्य के परिपेक्ष में नवीन ज्ञान की खोज करना पुराने ज्ञान और पुराने विश्वासों की नई आवश्यकताओं और खोजने के प्रकार में व्याख्या करना। व्यक्तियों में जन्मजात गुणों की खोज करना तथा प्रशिक्षण के माध्यम से उनका विकास करना।

राष्ट्रीय आवश्यकताओं के अनुरूप जनशक्ति तथा जनता की सामाजिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए आधुनिक शिक्षा प्रणाली का प्रसार करना। भारत में ऐसी विभूतियों को तैयार करना जो राजनीतिक प्रशासन व्यवसाय उद्योग एवं वाणिज्य आदि के क्षेत्र में स्वास्थ्य प्रतिनिधित्व कर सके।

1.1.3.6 स्वरूप

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज में शिक्षा सामाजिक नियंत्रण, व्यक्तित्व निर्माण तथा सामाजिक व आर्थिक प्रगति का मापदंड होती है भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन 1835 ईस्वी में लागू किया गया था जिस तीव्र गति से भारत में के सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक परिदृश्य

में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की प्रस्त भूमि उद्देश्य चुनौतियों तथा संकट का गहन अवलोकन करें सन 1835 में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की न्यू रखी गई थी तब लॉर्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था की अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलिया की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है इसके फल स्वरुप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 में भारत की साक्षरता 10% के आंकड़े को भी पर नहीं कर पाई स्वतंत्र ता स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13% ही थी।

इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लगभग पिछले 200 वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर और उच्च वर्ग केंद्रित श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी।

1.1.3.7 शिक्षा की समस्याएं

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है जीवन की सच्चाई का गला घोटने वाली यह शिक्षा जिंदगी जीने का नहीं अभी तो जिंदगी रोने का पाठ पढ़ती है सर पर उपाधियों का बोझ लिए हुए जीवन की सड़क पर चलता-चलता थक जाता है परंतु उपाधियों की गठरी उसे ठीक तरह से जीना नहीं सिखा पाती।

वाणी, कर्म और विचार की शुद्धि का पाना ही शिक्षा का परम लक्ष्य है, लेकिन आज शिक्षा भ्रष्ट हो चुकी है विद्यार्थियों को शुद्ध विचार चरित्र नई चेतना नई प्रेरणा तथा नया दृष्टिकोण प्रदान करना ही शिक्षा का मुख्य लक्ष्य होता है परंतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली नेदेश को अंधकार में ले जाकर नाश के कगार पर खड़ा कर दिया है शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अनेकों समस्याएं उत्पन्न हुई हैं।

1.1.3.7.1 नई वैश्विक गुलामी

आज से करीब 500 वर्ष पूर्व तक समस्त विश्व की प्रजाएं पारंपरिक रूप से चले आ रहे नीति में आधार पर सुखी जीवन जीती आ रही थी किंतु कुछ एक स्वार्थी तत्वों द्वारा स्वयं हित के लिए क्या योजनाएं बनी तथा उसका कार्य वर्णन कैसे हो रहा है कि चलाकी से समस्त विश्व को गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा जा रहा है।

15वीं शताब्दी के अंत समय में यूरोप के दो राष्ट्रों की सारे विश्व पर निर्लज दादागिरी चल रही थी यूरोप के बाहर नए-नए देश खोजने उनको लूटने उन प्रशासन करना यह सब इन दोनों देशों के बीच स्पर्धा का विषय बन गया था नए खोजे गए देश के स्वामित्व के बारे में इन दोनों राष्ट्रों के बीच अक्सर विवाद और संघर्ष होते थे और यह विवाद ईसाई धर्म गुरु पीओपी के दरबार तक पहुंचे इन विवादों का स्थाई हल लाने के लिए तत्कालीन पोप ने विश्व को दो भागों पूर्व पश्चिम में बताकर स्पेन और पुर्तगाल को दे दिए और इस तरह समस्त विश्व पर स्वयं को सर्वोच्च स्वामित्व को स्थापित किया विभाजन का यह दस्तावेज 1493 के 'बुल' के रूप में जाना जाता है।

इस वैश्विक गुलामी का पहला उद्देश्य है विश्व की चार पुरुषार्थ आधारित महाशिव व्यवस्था के स्थान पर एक महान्याय रचना अर्थात शोषण व हिंसा के आधार पर रचित भौतिक व अन्ना अनात्मवादी व्यवस्था की स्थापना इसका प्रेरक बाल चर्चा संस्था है जिसकी अनेक योजनाओं में से एक योजना है बहुमत के आधार पर ईसाई धर्म गुरु को विश्व धर्म बनाना इस योजना की सफलता की शुरुआत के लिए ही सन 1812 में शिकागो में पहली विश्व धर्म परिषद का आयोजन हुआ।

इस योजना का दूसरा उद्देश्य है, कि विश्व के किसी भी देश में इसी प्रजा के वंशज स्थाई रूप से बच सकें सर्वशक्ति देश के रूप में किसी भी देश के नागरिक बन सके इस उद्देश्य की सफलता के लिए स्थानिक मूल प्रजा की संस्कृति धर्म भाषा शिक्षण प्रणाली खानपान रीति रिवाज में दखलकर उन्हें छेद कर उनका नाश कर आधुनिकता का प्रवेश करवाना अन्य उद्देश्य हैं हिंदू प्रजा की संस्कृत का ईसाईकरण करना भूल प्राजों के स्वतंत्र अस्तित्व व पहचान का नाश करना समस्त विश्व में एक धर्मएक धर्म गुरु एक प्रजा एक सी एक वेशभूषा एक आर्थिक ढांचा एक भाषा इत्यादि के द्वारा ईसाई धर्म में राज्य सत्ता को स्थापित करना।

1.1.3.7.2 विकास के खण्डहर

विकास नामक शब्द आजकल एक वेद वाक्य सामान बन गया है। इस शब्द के सामने एक लफ़्ज़ भी बोलने की हिम्मत कोई नहीं करता आज के युग में वह एक पवित्र गाय है उसकी निंदा या अपमान सत्य माना जाता है परंतु विकास के बारे में ऐसी मजबूत सोच के सामने विरोध का और निकलने वाले कुछ विचार को में से एक बाली यूनिवर्सिटी में कार्य जर्मन विचारक वूल्फगेंग झेक्स हैं उन्होंने अमेरिका की पेन्सील्वेनीया यूनिवर्सिटी में मुलाकाती प्रध्यापक के तौर पर काम किया हुआ है। "डेवलपमेंट डिक्शनरी" नामक पुस्तक को

भी उन्होंने संपादित किया है उन्होंने बताया कि विकास के विषय में केवल थोड़े हरे रंग के चित्र बनाने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा इस विषय में बाय साज सज्जा में काम नहीं चलेगा परंतु विकास के बारे में हमारा संपूर्ण मानस परिवर्तन अनिवार्य है।

लगभग 25-50 वर्ष पहले यह प्रश्न पूछा जाता था कि मनुष्य को सुख चैन से जीने के लिए क्या चाहिए तो इसका सीधा सादा उत्तर मिलता था की रोटी कपड़ा और मकान। लेकिन आज के दौर में इस प्रश्न का उत्तर बदल चुका है अब मनुष्य का गुजारा रोटी कपड़ा और मकान से नहीं होता अब उसे जीने के लिए कर मोबाइल एयर कंडीशनर टेलीविजन वाशिंग मशीन फ्रिज ओवन कंप्यूटर और इंटरनेट आदि भी चाहिए जेनरेशन अब उम्र के नहीं बल्कि टेक्नोलॉजी से बदली है 3G और 4G से इंटरनेट की स्पीड फास्ट फास्टर से फास्टेड तक पहुंच गई है और इसी से स्पीड मापी जाती है सब कुछ फटाफट होना चाहिए पूरी दुनिया ही जैसे मोबाइल में समा गई है कोई भी काम हो तो एक ही बात मोबाइल है ना व्यक्ति जब चाहे तब घड़ी के छठवें भाग में दुनिया के किसी भी कोने में मौजूद व्यक्ति से वीडियो टॉप कर सकता है दुनिया छोटी से छोटी होती जा रही है पूरा ग्लोबल जैसे एक गांव बन गया है क्या यही विकास है तो फिर हमने विकास ही क्या किया। व्यक्ति-व्यक्ति से दूर होता जा रहा है मानस विशेषज्ञों के लिए यह चिंता का कारण बनता जा रहा है।

विश्व के पास आज सबसे श्रेष्ठ सस्ता भारत के प्राचीन वैदिक समाजवाद का ही है हमारी अर्थव्यवस्था ही हमारी संस्कृति थी जिसमें सिद्धांत था कि "जितनी चादर हो उतने ही पैर पसारने चाहिए" अर्थात कर्ज नहीं लेना चाहिए कम से कम 20% बचत करें और गरीबी और दान के लिए 10% रकम खर्च करनी चाहिए भारत दुखी हुआ है तो इसका कारण भी यही है कि हमने अपने मूल्यों की अनूढ़े की और आधुनिकता का अंधन अंधानुकरण किया हमें और पूरी दुनिया को अंतत अपने मार्ग पर ही लौटना पड़ेगा ऐसी स्थिति उत्पन्न हो चुकी है और आज नहीं तो कल हमें अपना ही पुराना लेकिन सच्चा मार्ग अपनाना ही पड़ेगा।

1.1.3.7.3 भारतीय शिक्षा का सर्वनाश

कारण यही है कि शिक्षा की वर्तमान समस्या के मूल में जाकर उसके कारण जाने बिना ही समस्या के निराकरण के उपाय किए जा रहे हैं शिक्षा की गाड़ी जो एक बार पटरी से उतर गई है वह पुन पटरी पर चढ़ नहीं रही है।

विगत 200 वर्ष से शिक्षा का गाड़ीपटरी से उतर गई है केवल उत्तर ही नहीं गई गलत पटरी पर चढ़ गई है उसे सही पटरी पर चढ़ने के लिए प्रथम तो यह जानने की आवश्यकता है की समृद्ध शिक्षा परंपरा को स्वस्थ कर देने वाली घटना कैसे घाटी।

इतिहास में हम अंग्रेजों के शासन के विषय में पढ़ते हैं हमारी गुलामी गुलामी से मुक्त होने हेतु किए गए आंदोलन अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचार आदि के संबंध में भी पढ़ते हैं परंतु यह है सब कुछ वास्तविकता की तुलना में बहुत अल्प है अंग्रेजों ने जो विनाश उठाया है वह हमें जो ज्ञात है उससे कई गुना अधिक है अधिक मात्रा में है अधिक भयंकर है अधिक व्यापक है और अधिक गहरा है उन्होंने भारतीय शिक्षा का सर्वनाश ही कर दिया है।

1.1.4 शिक्षा के संबंध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव

शिक्षा के संदर्भ में विभिन्न आयोगों ने सुझाव दिए हैं जो निम्नलिखित है।

1.1.4.1 राधाकृष्णन आयोग (1948-49 ई०)

इस आयोग ने शिक्षा के उद्देश्यों पर विचार करते हुए ऐसे शिक्षित नागरिक तैयार करने पर बल दिया। जो विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र को नेतृत्व प्रदान कर सकें, प्रजातांत्रिक मूल्यों को स्थापित कर सके, सांस्कृतिक धरोहर व मूल्यों को बनाए रखें, नैतिक चरित्र व उच्च आदर्शों से युक्त हो राष्ट्रीय एकता व अनुशासन में सहायक हो तथा स्वयं को अंतरराष्ट्रीय सद्भावना व भाईचारे के लिए समर्पित कर सकें।

1.1.4.2 माध्यमिक शिक्षा आयोग (1953)

इस आयोग ने सुझाव दिया की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करना नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करना, व् व्यावसायिक कौशल का विकास करना है। व्यक्तित्व का विकास करना साथ ही नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य शिक्षा का विकास करना है।

1.1.4.3 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964-66 ई०)

कोठारी आयोग ने कहा है की शिक्षा का अधिकार इस ढंग से किया जाना चाहिए कि इससे राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े, आधुनिककरण की गति में तेजी आए तथा सामाजिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो।

कोठारी आयोग के अनुसार- "देश के आर्थिक विकास, सच्चे जनतंत्र का निर्माण, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने, मूल्यों को जीवित रखने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। शिक्षा राष्ट्र की संपन्नता एवं कल्याण की कुंजी है। अतः शिक्षा के सभी अंगो का पुनः सर्वेक्षण आवश्यक है।"

1.1.4.4 नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

नई शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा का विशाल प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। इन सभी प्रतिवेदनों में भारतीयकरण की आवश्यकता पर अपनी संतुतियाँ प्रस्तुत की गई और यह भी प्रस्ताव किया गया कि भारतीय शिक्षा का आधार भारतीयता जीवन दर्शन एवं भारतीयों की आकांक्षाओं को ही होना चाहिए । आयोग ने राष्ट्रीय चेतना को बढ़ावा देने के लिए निम्न सुझाव दिए-

राष्ट्रीय चेतना को और गहरी बनाने के लिए विशेष रूप से दो कार्यक्रम अपनाए जा सकते हैं -

(क) हमारी सांस्कृतिक विरासत का फिर से मूल्यांकन करना तथा उसे समझना।

(ख) हम जिस भविष्य की कामना करते हैं उसके प्रति दृढ़ प्रेरणा, पूर्ण निष्ठा को उत्पन्न किया जाए।

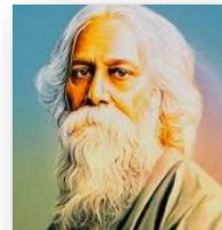
1.1.5 समाज सुधारकों का शैक्षिक योगदान

ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय भारतीय भाषाई प्रेस के प्रवर्तक जागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रमुख नेता थे। धार्मिक व सामाजिक विकास के क्षेत्र में राजा राममोहन राय का नाम सबसे अग्रणी है। शिक्षा के माध्यम से राम मोहन राय ने तत्कालीन भारतीय समाज की कट्टरता, रूढ़िवादिता एवं अंधविश्वासों को दूर करके उसे आधुनिक बनाने का प्रयास किया।



भारतीय समाज सुधारकों में स्वामी विवेकानंद का नाम सर्वोपरि है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली के आलोचक और व्यावहारिक शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि वर्तमान शिक्षा मनुष्य को जीवन संग्राम के लिए कटिबद्ध नहीं करती वरन उसे शक्तिहीन बनाती है। प्रचलित शिक्षा के स्थान पर स्वामी विवेकानंद जी भारत के लिए किस प्रकार की शिक्षा चाहते थे उनके शब्दों में उल्लेखनीय है "मनुष्य में पूर्व निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना शिक्षा है"।

रविंद्र नाथ टैगोर ने शिक्षा में प्राचीन भारतीय आदर्श को स्थान दिया। यह आदर्श है 'सा विद्या या विमुक्तए' इस आदर्श के अनुसार शिक्षा मनुष्य को अध्यात्मिक ज्ञान देकर उसे जीवन और मरण से मुक्ति प्रदान करती है।



टैगोर ने स्वयं लिखा है - "सच्ची शिक्षा संग्रह किए गए लाभप्रद ज्ञान के प्रत्येक अंग के प्रयोग करने में उस अंग के वास्तविक स्वरूप को जानने में और जीवन में जीवन के लिए सच्चे आश्रय का निर्माण करने में है।"

टैगोर के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शारीरिक विकास, मानसिक विकास, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास, राष्ट्रीयता का विकास ,अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास करना है।

गांधीजी साक्षरता या लिखने पढ़ने के साधारण ज्ञान को शिक्षा नहीं माना है । उनके विचार से साक्षरता ना तो शिक्षा का अन्त है और ना शिक्षा का प्रारंभ। यह तो केवल स्त्री- पुरूष को शिक्षित करने का साधन है।

गांधी जी ने स्पष्ट रूप से कहा है "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुष्य के शरीर मस्तिष्क तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्तम विकास से है।"*

इनके अनुसार शिक्षा का उद्देश शारिरिक विकास, नैतिक व चारित्रिक विकास मानसिक विकास, जीवकोपार्जन, तथा सांस्कृतिक आदि का विकास करना है।

रामकृष्ण परमहंस जी आध्यात्मिक, सामाजिक,धार्मिक एवं मानव कल्याण के लिए अनेक महत्वपूर्ण अनमोल विचार रखे है। जो इस प्रकार है -

अपने विचारों से ईमानदार रहें, समझदार बने, अपने विचारों के अनुसार कार्य करें, आप निश्चित रूप से सफल होंगे। एक ईमानदार और सरल हृदय के साथ प्रार्थना करो, और आपकी प्रार्थना सुनी जाएगी।जिसने आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त कर लिया उस पर काम और लोभ के विष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ऐसे अनेक समाज सुधारक इस देश में जन्म लिए हैं जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अहम योगदान दिया और इन विचारकों के विचारों से प्रेरित होकर अनेक प्रकार की संस्थाओं एवं स्कूलों का अभ्युदय हुआ।

1.1.6 विभिन्न धार्मिक संस्थानों का अभ्युदय एवं उनका शैक्षिक योगदान

विभिन्न शिक्षण संस्थान ज्ञान के मंदिर है। मंदिर इसलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं।

"न ही ज्ञानेन सदृशं पवित्र मिह विद्यते।"

वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी कहते हैं ब्रह्म ज्ञान मात्र है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है। इस देश में ज्ञान का सम्मान इतना है कि वेदव्यास, वाल्मीकि व पाणिनि जैसे मनीषियों को भगवान मान लिया क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है, जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है।

हमारे अध्यात्म के चार भाग है - आत्मा, मन, बुद्धि ,और शरीर। शरीर और बुद्धि शिक्षा में तथा आत्मा और मन धर्म के विषय बन गए। शिक्षा धर्मनिरपेक्ष हो गई। तब व्यक्ति स्वधर्म की पहचान कहां सीखेगा? शिक्षा के मूल धरातल पर आधिदैविक आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक तो खो ही गए, व्यक्तित्व विकास पीछे छूट गया। योग - क्षेम की परिभाषा ही बदल गई। ज्ञान छूट गया, विज्ञान रह गया। ब्रह्म छूट गया, माया रह गई। सम छूट गया, कृति रह गई यानि संस्कृति खंड- खंड हो गई। वसुधैव कुटुंबकम् निजी स्वार्थ में बदल गया।

त्रेता और द्वापर में राम और कृष्ण ज्ञान प्राप्त के लिए वाल्मीकि एवं संदीपनी के आश्रम में जाते थे। गुरुकुल समाज से मिली दीक्षा पर आधारित थे । गुरुकुल में पात्रता के आधार पर शिक्षा दी जाती थी। समय परिवर्तन के साथ ही द्वापर बीत गया।

शिक्षा में कुछ काल तक धर्म की भूमिका बढ़ी लेकिन समय बीतेते अंग्रेजों का आगमन हुआ और अंग्रेजों ने नई व्यवस्था बनाई। इस व्यवस्था के अनुसार न शिष्य गुरु के घर जाने लगे न ही गुरु शिष्य के। स्कूल खड़े हो गए, विषय तय हो गए, वेद के 'गुरु' और 'अंतेवासी' शब्द विदा हो गए।

भारतीय पारंपरिक संस्कृति विरासत को जागृत करने के लिए तथा प्राचीन शिक्षण पद्धति को लागू करने के लिए देश के अंदर विभिन्न धार्मिक संस्थाओं का अभ्युदय हुआ। ये संस्थाएं भारतीय संस्कृति को बनाए रखने के लिए व तकनीकी शिक्षा के साथ-साथ नैतिक,आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रदान कर रही है।

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

हम सभी जानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां केवल पेट की पूर्ति दिखाई देती है इस शिक्षा प्रणाली ने देश को अंधकार में ले जाकर नाच के कगार पर खड़ा कर दिया है शिक्षा का तारा दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है इनके बीच तनाव ही तनाव देखने को मिलता है ऐसे

में भारत के हित और उत्कर्ष के लिए सबसे जरूरी है कि देशभर में प्राचीन भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अपनाई जाए और इस अंग्रेजी मैकाले शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार हो। क्या हम सब इस शिक्षा प्रणाली में रुचि लेते हैं इस प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने हेतु मेरे द्वारा यह शोध प्रबन्ध विषय वस्तु लेने की इच्छा जागृति हुई फल स्वरुप में इस शोध कार्य की प्रगति हेतु अग्रसर हुई।

1.3 समस्या कथन

'शिक्षा में अभिनव प्रयोग: भारत उदय गुरुकुल'

1.4 अध्ययन का औचित्य

शिक्षा जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है उचित शिक्षा से मूल्यवान समाज का निर्माण संभव है शिक्षा से ही हम अपनी ज्ञानात्मक परंपरा को आगे बढ़ते हैं शिक्षक एवं शिक्षक की प्रक्रिया को इस बात के प्रति सावधानी आगे बढ़ते हैं। शिक्षक एवं शिक्षक की प्रक्रिया को इस बात के प्रति सावधानी बरतनी होगी की शिक्षा के नाम पर अपने पूर्व ग्रहण और अवधारणाओं को बालकों के मन में रोक कर उनकी स्वतंत्रता को सीमित न करें। शिक्षा का उद्देश्य है सही रिश्तो की स्थापना शिक्षक विद्यार्थी और समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को पहचाने स्वयं की पहचान के साथ जीवन की समग्रता को समझे किसी भी राष्ट्रीय समाज को ऊपर उठाने का श्रेय शिक्षक को जाता है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही ऐसी प्रणाली है जिसका पुनः उदय करके वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार किया जा सकता है।

प्रस्तुत लघु शोध गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित है जिसमें भारत उदय गुरुकुल का वर्णन किया गया है, जो वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार कर संस्कारी व समृद्ध भारत के पुनर्जागरण का शंखनाद करता है।

क्या गुरुकुल से संबंधित के माध्यम से शिक्षा के सम्प्रत्ययों को विकसित किया जा सकता है?

क्या आधुनिक शिक्षा प्रणाली में हानिकारक तथा नकारात्मक पहेलियां से नई पीढ़ी को सुरक्षित किया जा सकता है?

क्या गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रति जागरूकता पैदा कर जीवन में उसकी महत्ता को बढ़ाया जा सकता है?

1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

1.5.1. शिक्षा

महात्मा गांधी - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

स्वामी विवेकानंद-"मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

जान डयूवी -"शिक्षा व्यक्ति की उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रख कर अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सके।"

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा से तात्पर्य गुरुकुल शिक्षा से है जहां महर्षियों द्वारा प्रस्थापित पुरुषों की 72 कला आधारित श्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया जाता है।

1.5.2 अभिनव प्रयोग

शब्दकोश के अनुसार अभिनव का अर्थ है बिल्कुल नया अथवा आधुनिक ढंग का प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में अभिनव प्रयोग से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र में किया जा रहे अनूठे/नवीन/विलक्षण प्रयासों से है।

1.5.3. भारत उदय गुरुकुल

यह भारत का एक प्रसिद्ध गुरुकुल है जो उत्तर प्रदेश प्रांत के हमीरपुर जिले के छानी पारा रूसी में स्थित है। रेलवे स्टेशन इंगोहटा से 20 किलोमीटर तथा बस स्टैंड से भी 20 किलोमीटर दूर स्थित है।

भारत उदय गुरुकुल शाहपुर सानी में प्राचीन गुरुकुल परंपरा के अनुरूप शास्त्रों की निशुल्क और आवासीय शिक्षा दी जाती है यहां विविध प्रकार की जीवन उपयोगी कलाओं एवं प्रवृत्तियां का अभ्यास साथ ही साथ विविध प्रकार के प्रशिक्षण द्वारा मानसिक एवं शारीरिक संतुलन निर्धारण एवं एकाग्रता आदि गुणों का विकास हो ऐसी क्रियाओं का अभ्यास कराया जाता है इसलिए इस गुरुकुल को विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम भी कहा जाता है।

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

जीवन के सभी कार्य के उद्देश्य होते हैं क्योंकि उद्देश्य के अभाव में जीवन दिशा हीन हो जाता है किसी भी कार्य की सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों पर निर्भर करती है उद्देश्यों एवं लक्षण का निर्धारण ही

कर को प्रगति प्रदान करता है वह देश के स्पष्ट अध्ययन को सरल व सफल बना देती है इसलिए प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं ताकि शोधकर्ता को सही दिशा मिल सके प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्न है-

1. भारत उदय गुरुकुल का निम्न के संदर्भ में अध्ययन करना

- **संस्थापक परिचय एवं दर्शन**
- **परिचयात्मक विवरण**
- **विशेषताएं**
- **विभिन्न प्रशिक्षण आयाम**
- **उपलब्धियां**

2. अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता चिन्हित करना

1.7 अध्ययन विधि

अनुसंधान विधि क्रिया को प्रचलित करने का एक ढंग है जो समस्या के प्रकृति द्वारा निर्धारित होती है प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अंतर्गत वैव्यक्तिक अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है-

1.7.1 वर्णनात्मक अनुसंधान

इस प्रकार के शोध के अंतर्गत अध्ययन के समय जो परिस्थितियों हैं उनका इस रूप में शोधार्थी द्वारा पृष्ठीकरण किया जाता है इसमें तथ्यों का संकलन महत्वपूर्ण होता है।

1.7.2 वैव्यक्तिक अध्ययन विधि

यही एक ऐसी विधि है जिसमें किसी सामाजिक इकाई के जीवन की घटनाओं का अन्वेषण तथा विश्लेषण किया जाता है सामाजिक इकाई के रूप में किसी एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक समुदाय आदि के बारे में अध्ययन किया जा सकता है।

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में मूर्ख एवं गुलाम बनने वाली अंग्रेजी मैकाले शिक्षा प्रणाली का बहिष्कार कर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के विकास को सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत शोध में केवल हमीरपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित "भारत उदय गुरुकुल" को ही सम्मिलित किया गया है।

1.9 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने राष्ट्र को ऐसे घेरे में लाकर खड़ा कर दिया है जहां शिक्षा जिंदगी जीने का नहीं अभी तू रोने का पाठ पढ़ती है इससे बचने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनः उदय की आवश्यकता पड़ी है ध्वस्तु ही प्राचीन शिक्षा प्रणाली को पुनः जीवित किए बिना भारतीय प्रजा एवं संस्कृति का समुद्धार असंभव है तभी मैकाली शिक्षा के दुष्प्रभाव से हमारी आज जो दुर्दशा हुई है उसे हम भारत को बचा पाएंगे।

भारत उदय गुरुकुल का अध्ययन भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, जो न केवल शैक्षणिक ज्ञान को बढ़ावा देता है, बल्कि व्यक्तित्व विकास और नैतिक शिक्षा पर भी जोर देता है। यह प्रणाली हमारे प्राचीन गुरुकुल परंपरा की उपज है, जिसमें विद्यार्थी ज्ञान, संस्कृति, और जीवन के विभिन्न पहलुओं का समग्र अध्ययन करते हैं। गुरुकुल का महत्व इसके माध्यम से संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण करना है, जो युवाओं को अपने मूल्यों और आस्थाओं से जोड़ता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रणाली आध्यात्मिक और मानसिक विकास पर ध्यान केंद्रित करती है, जिससे विद्यार्थी संतुलित और आत्मनिर्भर बनते हैं। सामूहिकता और सहयोग की भावना को विकसित करने के लिए, गुरुकुल शिक्षा में सह-शिक्षा और समूह गतिविधियों को प्राथमिकता दी जाती है, जो समाज में सामाजिक जिम्मेदारी का अनुभव कराते हैं। साथ ही, व्यावहारिक ज्ञान और कौशल को भी सिखाया जाता है, जिससे विद्यार्थी जीवन में चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार होते हैं। इस प्रकार, भारत उदय गुरुकुल का अध्ययन न केवल शिक्षा का माध्यम है, बल्कि यह एक समग्र विकास की प्रक्रिया है, जो समाज और संस्कृति को मजबूत बनाता है।

भारत उदय गुरुकुल का मुख्य लक्ष्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को देश के मुख्य धारा की शिक्षा बनाने का है 22 साल पूर्व रवि कान्त पाठक जी द्वारा घर के ही बच्चों से शुरू किया गया यह गुरुकुलम आज अनेक नए गुरुकुल के शुभारंभ हेतु प्रेरक मार्गदर्शन बन गया है। साबरमती का गुरुकुल एक आंदोलन व क्रांति का स्वरूप अखत्यार कर चुका है इस दिव्य गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही भारत का स्वर्णिम भविष्य निहित है और इसकी सफलता का श्रेय उन सभी ऋषि मुनियों को ही जाता है जिनके मार्गदर्शन में गुरुकुल चलने का प्रयास

कर रहे हैं। भारत की महान ऋषि संस्कृति से नि:सृत इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति के कारण ही हमारा राष्ट्र कभी जगतगुरु हुआ करता था और आगे भी भारत उसे प्रतिष्ठा को तभी प्राप्त करेगा जब वही से 56 तिथि देशभर में पुनः स्थापित होगी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा इन उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है क्या है लुप्त हो रही प्राचीन शिक्षा प्रणाली ज्ञानपीठों तथा विद्याधामों को पुनर्जीवित करके तेजस्वी सूर्योदय की लालिमा से दिव्य ज्ञान की सुनहरी किरणों को चाचू और फैलाकर राष्ट्र को ज्ञान उत्तर भारत बनाने का सपना अब सरकार होता दिखाई दे रहा है विद्यार्थियों अभिभावकों आदि की इस शिक्षा प्रणाली में कितनी रुचि है साथ ही वह इसका कितना प्रयोग करेंगे तथा अध्यापन में कितनी वरीयता देते हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के क्या लाभ हैं? आदि के अध्ययन करना ही इस शोध का लक्ष्य है।

उपरोक्त कथन के आलोक में वर्तमान परिपेक्ष्य के आधार पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपने व्यक्तित्व में कितना समाहित करते हैं, कितना महत्व देते हैं तथा इसका कितना उपयोग करते हैं तथा इनसे संबंधित उनके सामने क्या समस्याएं आती हैं इसके क्या लाभ हैं आदि को ज्ञात करना ही अध्ययन का मूल्य ध्येय है।

द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1. प्रस्तावना

2.2 शिक्षा में अभिनव प्रयोग से संबंधित शोध अध्ययन

2.3. अध्ययन से संबंधित लेख, समाचार आदि

2.4. निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1. प्रस्तावना:

संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोष, पत्र-पत्रिकाओं प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धो एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या चयन परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। अतीत, वर्तमान तथा भविष्य की दिशा निर्धारण का माध्यम है। अतीत के कृत्य भावी अध्ययन के लिए दिशा निर्देश का कार्य करते हैं। अनुभव विगत तथा वर्तमान कार्य की प्रकृति तथा प्रक्रिया की स्पष्ट को विकसित करने में सहायक होते हैं।

संबंधित साहित्य का पूनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान के महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसंधान के महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। नव अनुसंधानकर्ता को इसके महत्व को समझना चाहिए।

गुड बार स्केट्स के अनुसार "योग चिकित्सा के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि संबंधी आधुनिकता खोजने से परिचित होता रहे, इसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र के लिए भी उसे क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोज से परिचित होना आवश्यक है।"

स्काट एवं वदींमर - "संबंधित साहित्य की समीक्षा से घिसी पिटी समस्याओं पर अनुसंधानकर्ता को व्यर्थ श्रम से मुक्ति मिल जाती है और उसे नई समस्याओं के समाधान हेतु इसे सहायता मिलती है।"

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण का औचित्य केवल संदर्भ ग्रन्थों की जानकारी प्राप्त कर लेना ही नहीं होता सामग्री एवं सूचना के स्रोतों का ज्ञान प्राप्त करना तो अनुसंधान कार्य श्रृंखला की एक कड़ी है। मुख्य कर तो अपने अनुसंधान से संबंधित सूचनाओं एवं संदर्भों को एकत्र करना होता है इन स्रोतों ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाओं आज की कहां कितनी सूचनाओं अपने अनुसंधान में उपयोगी हैं उन्हें निकाल कर एकत्र करना तथा अनुसंधान प्रतिवेदन में यथा स्थान उनका प्रयोग करना संबंधित साहित्य के सर्वेक्षण का वास्तविक औचित्य होता है, जो निम्न बिंदुओं द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है –

1. चयनित पत्र पत्रिकाओं एवं अन्य संबंधित ग्रन्थों का अध्ययन।

2. महत्वपूर्ण एवं आवश्यक अंशों, विचार-बिंदुओं एवं अन उपयोगी सामग्री का संक्षेप में अभिलेखन।

3. अंत में समस्त अभिलिखित सामग्री का शोध प्रबंध अथवा प्रतिवेदन में प्रयोग।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण का कार्य

शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं धारणाओं को समझने में सहायता प्रदान करना है, जो निम्न बिंदुओं में स्पष्ट है -

1. संबंधित क्षेत्र में जो व्यक्ति कार्यरत हैं उसके समझ उत्पन्न होने वाली समस्याओं का पता लगाना।

2. यह अनुसंधान कार्य के लिए आवश्यक सैद्धांतिक पृष्ठभूमि तैयार करता है तथा प्रत्येक प्रत्यय व धारणा को स्पष्ट करता है।

3. वर्तमान में तथा पिछले कुछ वर्षों में किन समस्याओं पर अनुसंधान किया गया है, ज्ञात करना।

4. अनुसंधान के लिए अपनाई जाने वाली, विधि प्रस्तुत उपकरण आंकड़ों के विश्लेषण के लिए प्रयोग में आने वाली, उपयुक्त विधियों को स्पष्ट करता है।

5. अनुसंधान कार्य के किस सीमा तक सरल उपयोगी बनाया जा सकता है, इसका ज्ञान कराता है।

6. इसका मुख्य कार्य समस्या के सीमांकन और परिकल्पना निर्माण में सहायता करना है।

7. संबंधित क्षेत्र में अनुसंधान किए जाने के मार्ग में आने वाली प्रमुख कठिनाइयों का पता लगाना।

2.2 शिक्षा में अभिनव प्रयोग से संबंधित शोध अध्ययन :

(1) देवी, प्रतिमा (1996) ने "उपनिषद काल में मानवता की शिक्षा" के अध्ययन में पाया कि-

उपनिषद कालीन मानव जाति था, जिससे आदर्श शैक्षिक सिद्धांत तैयार किया जा सके तथा भविष्य में शिक्षा में जागृति लायी जा सकती है।

इसके निष्कर्ष स्वरूप पाया गया कि वर्तमान व उपनिषद कालीन शिक्षा सिद्धांतों को यदि तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो उपनिषद कालीन शैक्षिक सिद्धांत बालक में आधारभूत गुणों का विकास करने में अधिक हुआ बालक को उच्च जीवन व उच्च आदर्श तक पहुंचाने में अधिक कारगर सिद्ध होता है।

(2) साहू, लकी (2012) ने "वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु शिष्य परम्परा की उपादेयता" के अध्ययन में पाया कि-

प्राचीन गुरू शिष्य परंपरा की हमारी वर्तमान, शिक्षा प्रणाली में अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि एक छात्रा के साथ-साथ जीवन कौशलों का संघर्ष मिले।

आज के सामाजिक मूल्यों को देखते हुए यह भी आवश्यक है कि शिक्षक ऐसा हो जो समाज के लिए आदर्श हो तथा वह अपने शिष्यों को अपने व्यक्तित्व वह ज्ञान से विकास के उच्च स्तर तक पहुंचा सके ।

जब हम यह मानते हैं की छात्रा के विकास के लिए सुदृढ़ छात्र-अध्यापक सम्बन्ध आवश्यक है तो हमें यह है भी मानना होगा कि अध्यापक ऐसा हो जो समाज, अभिभावक व छात्र के लिए आदर्श हो।

(3) शर्मा, श्रुति (2013) ने अपने अध्यापन "वैदिक जीवन दर्शन की वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता" में पाया कि-

वैदिक जीवन का यह सिद्धांत विश्व की संस्कृति में शायद ही कहीं प्रतीत हो। जीवन मानव का हो या पदार्थ का वस्तुत: सिद्धान्त तो यही है की जन्म के पश्चात मानव में जो 6 प्रकार के विचारक आते हैं।

वह मानव जीवन की परिकल्पना के 6 आधारभूत स्तम्भ हैं क्योंकि जीवन नाम ही विभिन्न प्रकार के परिवर्तनों का है और ये सब परिवर्तन विद्वान व धार्मिक माता-पिता तथा आचार्यों के संघर्ष से बालक के विद्यार्थी जीवन में पिरो दिए जाते हैं।

अतः जीवन शरीर का आवरण धारण करने से लेकर आत्मा से अनात्म तत्व का निवारण करने की जो कला है, जीवन कहलाती है।

(4) सिंह, मृदुला (2014) "वैदिक कालीन सभ्यता एवं शिक्षा:वर्तमान मे प्रासंगिकता" में पाया कि-



वैदिक कालीन सभ्यता एवं शिक्षा : वर्तमान में प्रासंगिकता

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की प्राचीन इतिहास विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबन्ध

2014

निर्देशक
डॉ० अजय कुमार सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जौनपुर (उ०प्र०)

शोधकर्त्री
कु० मृदुला सिंह
एम०ए० (प्राचीन इतिहास)

-: अध्ययन केन्द्र :-
तिलकाधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)
सम्बद्ध- वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ०प्र०)

वैदिक काल की सभ्यता और शिक्षा प्रणाली में समाहित ज्ञान और मूल्य आज के संदर्भ में भी गहन प्रासंगिकता रखते हैं।

इस परंपरा के अध्ययन और उपयोग का उद्देश्य हमारे वर्तमान जीवन और शिक्षा प्रणाली में उनके द्वारा प्रदान किए गए नैतिक, सामाजिक, और बौद्धिक दृष्टिकोणों को पुनर्जीवित करना और उन्हें नए सिरे से समझना है।

वैदिक कालीन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्तित्व के हर पक्ष का विकास करना था, जिसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, और आध्यात्मिक विकास शामिल है। आज की शिक्षा प्रणाली भी समग्र विकास पर जोर देती है, और वैदिक शिक्षा के इस दृष्टिकोण से हम सीख सकते हैं कि कैसे केवल अकादमिक ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन के हर पहलू को शामिल करके संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण किया जाए।

(5) मिश्र, कुमार मनीष (2012) "वैदिक एवं पौराणिक शिक्षा प्रणाली और वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन" में पाया कि-



VBSP-05881-T17097

"वैदिक एवं पौराणिक शिक्षा प्रणाली और वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन"

वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर की शिक्षाशास्त्र में पी–एच०डी० उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2012

शोध निर्देशक
डॉ० नरेश चन्द्र श्रीवास्तव
पूर्व रीडर (शिक्षा संकाय)
राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)
Dr. NARESH CHANDRA SRIVASTAVA
Ret. Reader (Faculty of Education)
Raja Harpal Singh P.G. College
Singramau, Jaunpur (U.P.)

शोधार्थी,
मनीष कुमार मिश्र
एम०एस–सी० (प्राणि विज्ञान)
एम०ए०, एम०फिल० (शिक्षाशास्त्र)
नामांकन संख्या – PU-2008/092

–: शोध केन्द्र :–
शिक्षा संकाय
राजा हरपाल सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
सिंगरामऊ, जौनपुर (उ०प्र०)

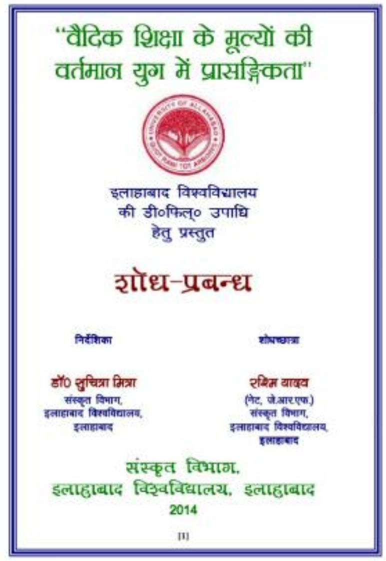
वैदिक और पौराणिक शिक्षा प्रणाली भारत की प्राचीन शिक्षा व्यवस्था का मूलाधार रही है, जो समाज को समग्र विकास और उच्च नैतिकता की ओर मार्गदर्शन करती थी। आज, जब भारतीय शिक्षा प्रणाली वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, और आधुनिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ रही है।

इन प्राचीन प्रणालियों की प्रासंगिकता और उपयोगिता को समझना अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इसका समीक्षात्मक अध्ययन हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आधुनिक समय में वैदिक और पौराणिक शिक्षा की कौन-सी विशेषताएँ पुनः अपनाई जा सकती हैं और उनकी सीमाओं का कैसे समाधान किया जा सकता है।

यह गुरुकुल आधारित थी, जहां शिक्षा केवल शास्त्रों का ज्ञान नहीं था, बल्कि जीवन के हर पहलू, जैसे नैतिकता, योग, ध्यान, और आत्म-ज्ञान पर आधारित थी। इस प्रणाली का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देना था।

पौराणिक काल में शिक्षा को अधिक समावेशी बनाया गया था, जिसमें व्यावहारिक जीवन से जुड़े विषयों जैसे ज्योतिष, चिकित्सा, युद्धकला, संगीत, कला और काव्य का भी समावेश था। इसके साथ ही धर्म, नैतिकता और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को भी शिक्षा का अनिवार्य अंग माना गया।

(6) यादव, रश्मि (2014) "वैदिक शिक्षा के मूल्यों की वर्तमान युग में प्रासङ्गिकता" पाया कि-

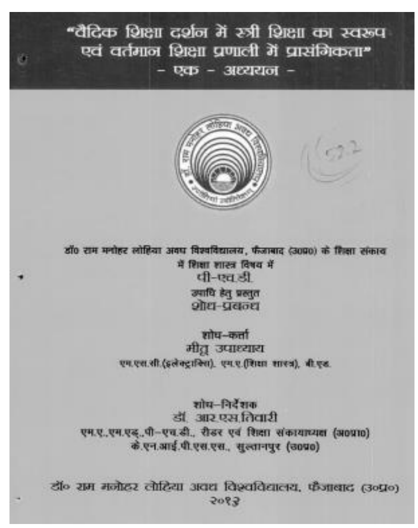


वैदिक शिक्षा प्रणाली के मूल्यों का अध्ययन हमें यह दिखाता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा ने मानव जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक, और बौद्धिक विकास को सर्वोपरि रखा था। इस शिक्षा प्रणाली के कुछ प्रमुख मूल्य, जैसे नैतिकता, अनुशासन, समाज के प्रति उत्तरदायित्व, समग्र विकास, आत्म-ज्ञान, और प्रकृति के साथ सामंजस्य, आज के संदर्भ में भी अत्यधिक प्रासंगिक हैं।

वर्तमान युग में, जब शिक्षा केवल अकादमिक उत्कृष्टता और व्यावसायिक सफलता पर केंद्रित होती जा रही है, वैदिक शिक्षा के मूल्य हमें यह सिखाते हैं कि व्यक्ति का संपूर्ण विकास कैसे किया जाए?

योग, ध्यान, और नैतिकता की शिक्षा आज के तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धी वातावरण में मानसिक संतुलन और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके साथ ही, समाज और पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता भी वैदिक मूल्यों का एक प्रमुख हिस्सा है, जो आज की पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों के समाधान में सहायक हो सकता है।

(7) उपाध्याय, मीतू (2013) "वैदिक शिक्षा दर्शन में स्त्री शिक्षा का स्वरूप एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता" पाया कि-



वैदिक काल में स्त्रियों की शिक्षा का उच्च स्थान था। उन्हें पुरुषों के समान शिक्षा के अधिकार प्राप्त थे, और कई स्त्रियाँ ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में पारंगत थीं। वैदिक ग्रंथों में "ऋषिकाओं" (महिला ऋषियों) का उल्लेख मिलता है, जो वेदों के मंत्रों की रचयिता थीं।

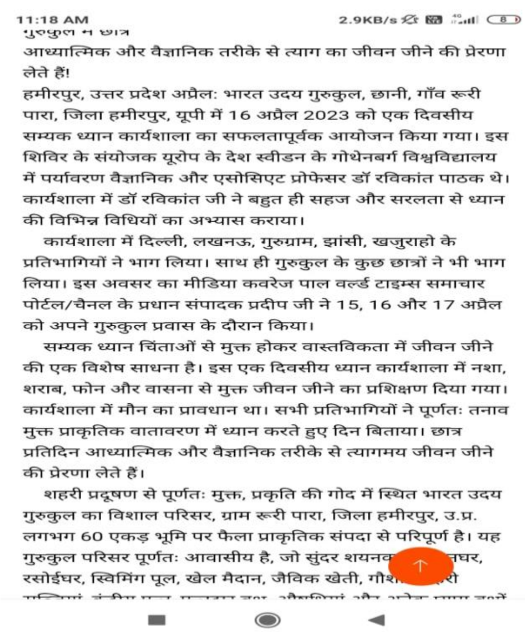
इस समय, शिक्षा केवल आध्यात्मिक या धार्मिक ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, संगीत, कला और अन्य व्यावहारिक विधाओं का भी समावेश था।

आज की शिक्षा प्रणाली ने महिलाओं के लिए समान अवसरों की दिशा में बड़े बदलाव किए हैं। वैदिक शिक्षा में स्त्री शिक्षा के जिन मूल्यों पर जोर दिया गया था, वे आज भी प्रासंगिक हैं, विशेषकर स्त्रियों के समग्र विकास और समाज में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण है।

2.3. अध्ययन से संबंधित लेख, समाचार आदि:

कार्यशाला में दिल्ली, लखनऊ, गुरुग्राम, झांसी, खजुराहो के प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही गुरुकुल के कुछ छात्रों ने भी भाग लिया।

सम्यक ध्यान चिंताओं से मुक्त होकर वास्तविकता में जीवन जीने की एक विशेष साधना है। इस एक दिवसीय ध्यान कार्यशाला में नशा, शराब, फोन और वासना से मुक्त जीवन जीने का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में मौन का प्रावधान था। सभी प्रतिभागियों ने पूर्णतः तनाव मुक्त प्राकृतिक वातावरण में ध्यान करते हुए दिन बिताया। छात्र प्रतिदिन आध्यात्मिक और वैज्ञानिक तरीके से त्यागमय जीवन जीने की प्रेरणा लेते हैं। शहरी प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त, प्रकृति की गोद में स्थित भारत उदय गुरुकुल का विशाल परिसर, ग्राम रूरी पारा, जिला हमीरपुर, उ.प्र. लगभग 60 एकड़ भूमि पर फैला प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। यह गुरुकुल परिसर पूर्णतः आवासीय है, जो सुंदर शयनक रसोईघर, स्विमिंग पूल, खेल मैदान, जैविक खेती, गौशाला, हरी सब्जियां कंटीय फल फलटार तन औषधियां और अनेक प्यपा वृक्षों से सुसज्जित।



11:18 AM

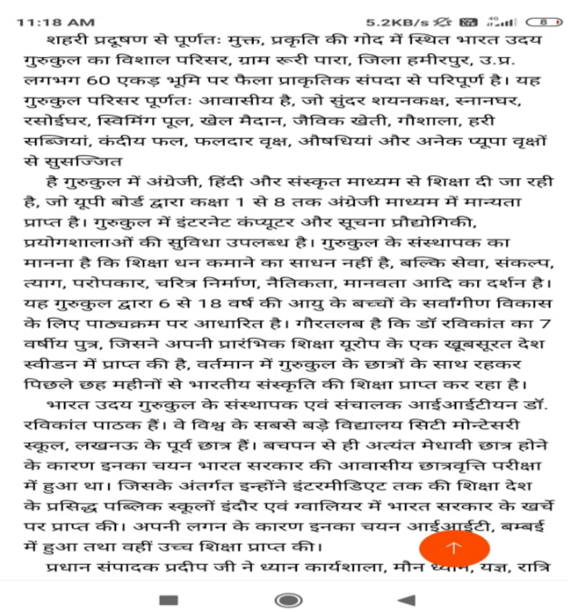
आध्यात्मिक और वैज्ञानिक तरीके से त्याग का जीवन जीने की प्रेरणा लेते हैं!

हमीरपुर, उत्तर प्रदेश अप्रैल: भारत उदय गुरुकुल, छानी, गाँव रूरी पारा, जिला हमीरपुर, यूपी में 16 अप्रैल 2023 को एक दिवसीय सम्यक ध्यान कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस शिविर के संयोजक यूरोप के देश स्वीडन के गोथेनबर्ग विश्वविद्यालय में पर्यावरण वैज्ञानिक और एसोसिएट प्रोफेसर डॉ रविकांत पाठक थे। कार्यशाला में डॉ रविकांत जी ने बहुत ही सहज और सरलता से ध्यान की विभिन्न विधियों का अभ्यास कराया।

कार्यशाला में दिल्ली, लखनऊ, गुरुग्राम, झांसी, खजुराहो के प्रतिभागियों ने भाग लिया। साथ ही गुरुकुल के कुछ छात्रों ने भी भाग लिया। इस अवसर का मीडिया कवरेज पाल वर्ल्ड टाइम्स समाचार पोर्टल/चैनल के प्रधान संपादक प्रदीप जी ने 15, 16 और 17 अप्रैल को अपने गुरुकुल प्रवास के दौरान किया।

सम्यक ध्यान चिंताओं से मुक्त होकर वास्तविकता में जीवन जीने की एक विशेष साधना है। इस एक दिवसीय ध्यान कार्यशाला में नशा, शराब, फोन और वासना से मुक्त जीवन जीने का प्रशिक्षण दिया गया। कार्यशाला में मौन का प्रावधान था। सभी प्रतिभागियों ने पूर्णतः तनाव मुक्त प्राकृतिक वातावरण में ध्यान करते हुए दिन बिताया। छात्र प्रतिदिन आध्यात्मिक और वैज्ञानिक तरीके से त्यागमय जीवन जीने की प्रेरणा लेते हैं।

शहरी प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त, प्रकृति की गोद में स्थित भारत उदय गुरुकुल का विशाल परिसर, ग्राम रूरी पारा, जिला हमीरपुर, उ.प्र. लगभग 60 एकड़ भूमि पर फैला प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। यह गुरुकुल परिसर पूर्णतः आवासीय है, जो सुंदर शयनक [illegible] नघर, रसोईघर, स्विमिंग पूल, खेल मैदान, जैविक खेती, गौश [illegible] री



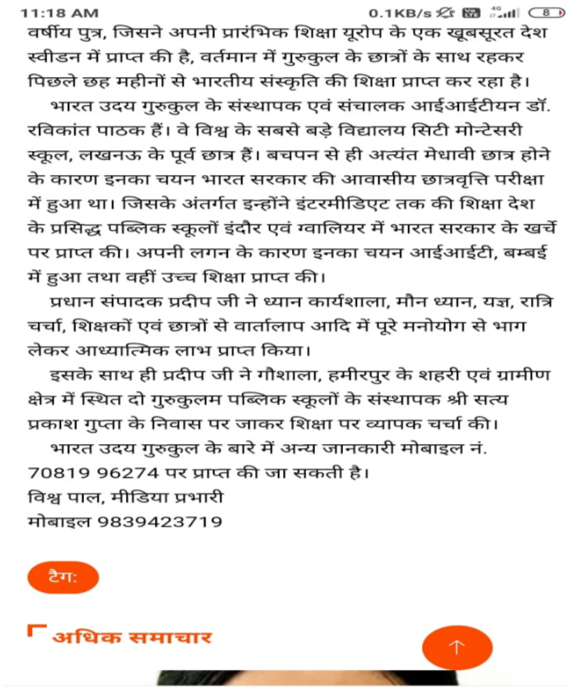
11:18 AM

शहरी प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त, प्रकृति की गोद में स्थित भारत उदय गुरुकुल का विशाल परिसर, ग्राम रूरी पारा, जिला हमीरपुर, उ.प्र. लगभग 60 एकड़ भूमि पर फैला प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। यह गुरुकुल परिसर पूर्णतः आवासीय है, जो सुंदर शयनकक्ष, स्नानघर, रसोईघर, स्विमिंग पूल, खेल मैदान, जैविक खेती, गौशाला, हरी सब्जियां, कंदीय फल, फलदार वृक्ष, औषधियां और अनेक प्यूपा वृक्षों से सुसज्जित

है गुरुकुल में अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, जो यूपी बोर्ड द्वारा कक्षा 1 से 8 तक अंग्रेजी माध्यम में मान्यता प्राप्त है। गुरुकुल में इंटरनेट कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी, प्रयोगशालाओं की सुविधा उपलब्ध है। गुरुकुल के संस्थापक का मानना है कि शिक्षा धन कमाने का साधन नहीं है, बल्कि सेवा, संकल्प, त्याग, परोपकार, चरित्र निर्माण, नैतिकता, मानवता आदि का दर्शन है। यह गुरुकुल द्वारा 6 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित है। गौरतलब है कि डॉ रविकांत का 7 वर्षीय पुत्र, जिसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा यूरोप के एक खूबसूरत देश स्वीडन में प्राप्त की है, वर्तमान में गुरुकुल के छात्रों के साथ रहकर पिछले छह महीनों से भारतीय संस्कृति की शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

भारत उदय गुरुकुल के संस्थापक एवं संचालक आईआईटीयन डॉ. रविकांत पाठक हैं। वे विश्व के सबसे बड़े विद्यालय सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ के पूर्व छात्र हैं। बचपन से ही अत्यंत मेधावी छात्र होने के कारण इनका चयन भारत सरकार की आवासीय छात्रवृत्ति परीक्षा में हुआ था। जिसके अंतर्गत इन्होंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा देश के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूलों इंदौर एवं ग्वालियर में भारत सरकार के खर्चे पर प्राप्त की। अपनी लगन के कारण इनका चयन आईआईटी, बम्बई में हुआ तथा वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त की।

प्रधान संपादक प्रदीप जी ने ध्यान कार्यशाला, मौन ध्यान, यज्ञ, रात्रि



11:18 AM

वर्षीय पुत्र, जिसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा यूरोप के एक खूबसूरत देश स्वीडन में प्राप्त की है, वर्तमान में गुरुकुल के छात्रों के साथ रहकर पिछले छह महीनों से भारतीय संस्कृति की शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

भारत उदय गुरुकुल के संस्थापक एवं संचालक आईआईटीयन डॉ. रविकांत पाठक हैं। वे विश्व के सबसे बड़े विद्यालय सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ के पूर्व छात्र हैं। बचपन से ही अत्यंत मेधावी छात्र होने के कारण इनका चयन भारत सरकार की आवासीय छात्रवृत्ति परीक्षा में हुआ था। जिसके अंतर्गत इन्होंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा देश के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूलों इंदौर एवं ग्वालियर में भारत सरकार के खर्चे पर प्राप्त की। अपनी लगन के कारण इनका चयन आईआईटी, बम्बई में हुआ तथा वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त की।

प्रधान संपादक प्रदीप जी ने ध्यान कार्यशाला, मौन ध्यान, यज्ञ, रात्रि चर्चा, शिक्षकों एवं छात्रों से वार्तालाप आदि में पूरे मनोयोग से भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

इसके साथ ही प्रदीप जी ने गौशाला, हमीरपुर के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में स्थित दो गुरुकुलम पब्लिक स्कूलों के संस्थापक श्री सत्य प्रकाश गुप्ता के निवास पर जाकर शिक्षा पर व्यापक चर्चा की।

भारत उदय गुरुकुल के बारे में अन्य जानकारी मोबाइल नं. 70819 96274 पर प्राप्त की जा सकती है।

विश्व पाल, मीडिया प्रभारी

मोबाइल 9839423719

टैग:

अधिक समाचार



11:18 AM

भारत उदय गुरुकुल, गाँव रूरी पारा, जिला हमीरपुर, यूपी में एक दिवसीय ध्यान कार्यशाला का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया

गुरुकुल में छात्र

आध्यात्मिक और वैज्ञानिक तरीके से त्याग का जीवन जीने की प्रेरणा लेते हैं!

हमीरपुर, उत्तर प्रदेश अप्रैल: भारत उदय गुरुकुल, छा... रूरी पारा, जिला हमीरपुर, यूपी में 16 अप्रैल 2023 को ए... सीय

2.4. निष्कर्ष

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि विभिन्न अनुसंधानकर्ता द्वारा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में सतत रूप से शोध किया गया है। पूर्ववर्ती शोधों में, उपनिषद काल में मानवता की शिक्षा, वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु शिष्य परम्परा की उपादेयता, वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में गुरु शिष्य परम्परा की उपादेयता, वैदिक जीवन दर्शन की वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता, वैदिक कालीन सभ्यता एवं शिक्षा:वर्तमान मे प्रासंगिकता, वैदिक एवं पौराणिक शिक्षा प्रणाली और वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता का समीक्षात्मक अध्ययन, वैदिक शिक्षा के मूल्यों की वर्तमान युग में प्रासङ्गिकता, वैदिक शिक्षा दर्शन में स्त्री शिक्षा का स्वरूप एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया किन्तु अभी तक भारत उदय गुरुकुल पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ।

अतः शोधार्थी द्वारा इस विषय पर शोधकार्य का निश्चय किया गया।

तृतीय अध्याय : संस्थापक परिचय एवं दर्शन

3.1. डॉ० रविकांत पाठक का जन्म एवं शिक्षा

3.2 डॉ. रविकांत पाठक के सामाजिक कार्य

3.3 डॉ. रविकांत पाठक का शैक्षिक चिंतन

3.4 शैक्षिक चिंतन में समाजिकता का प्रवेश

तृतीय अध्याय

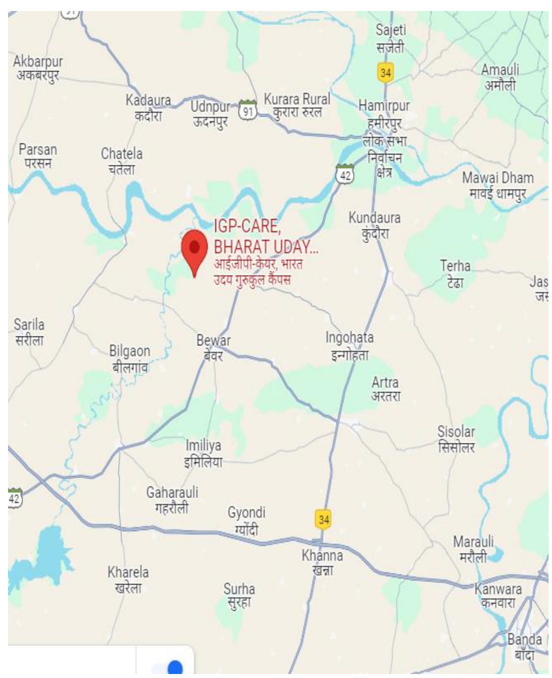
संस्थापक परिचय एवं दर्शन

3.1. डॉ० रविकांत पाठक का जन्म एवं शिक्षा



डॉ० रविकांत पाठक का जन्म 3 अक्टूबर 1973 को उत्तर प्रदेश के जिला-हमीरपुर में हुआ था। ये एक ऐसे व्यक्तित्व का नाम है जिन्होंने इस देश को गुलाम बनाए रखने वाली विनाशकारी मैकाले की अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का सशक्त और सफल विकल्प दिया आज के अनेक व्यक्ति "भारत उदय गुरुकुल" को देखने देश और दुनिया के कोने-कोने से लोग आ रहे हैं।

डॉ० रविकांत पाठक जी का जन्म उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले में एक साधारण पाठक परिवार में हुआ है। इनके पिता जी का नाम परशुराम पाठक है। उनके चेहरे पर सरल मन और ऋषियों-मुनियों जैसी चमक है। दुबले-पतले रविकांत पाठक जी को देखकर इस बात का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता कि पाठक जी पुनः भारत निर्माण का मार्गदर्शक हैं। पाठक जी के पूरे परिवार में धार्मिक, आध्यात्मिक और सात्विक जीवन मूल्यों का नजारा देखने को मिलता है। उनके घर का आंगन कच्चा और प्राकृतिक है। इनका आंगन गोबर से लीपा-पोता हमेशा मिलेगा। जिसको देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि इनका जीवन प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है। इनका मुख्य उद्देश्य मानव को चरित्रवान, स्वावलंबी और प्रतिभाशाली बनाना है। व्यक्ति का जीवन शिक्षा (स्नातक और परास्नातक) होने के बाद नौकरी प्राप्त करने में आधा जीवन बीत जाता है। जब ऐसी स्थिति पैदा होती है कि अधिकांश लोग कहते हैं कि ऐसे शिक्षा का क्या लाभ जो "दो वक्त की रोटी" भी न दिला सके। अब उनके लिए



तथाकथित शिक्षा और डिग्री का कोई महत्व नहीं है उनके मुताबिक जो जीवन जीने की कला सीखना, वही वास्तविक शिक्षा है।

आधुनिक युग में, बढ़ते भौतिकवाद और भोगवाद ने मानव के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर संकट में डाल दिया है। मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अवसाद और चिंता जैसी बीमारियाँ तेजी से दावानल की भांति पुरे संसार में फैल रही हैं, जिनका मुख्य कारण हमारी सुविधाभोगी, और तनावपूर्ण जीवनशैली है। इस संकट का मूल कारण है— अविद्या, अर्थात् सतही, भौतिकवादी शिक्षा, जो एक अस्थिर, भययुक्त और स्वार्थी शहरी जीवन को बढ़ावा देती है। यह प्रकृति के सह-अस्तित्व की समझ से रिक्त शहरी जीवनशैली के लोगों को अंततः असंतुष्ट और निरंतर नए सुखों की कामना में भटकने के लिए छोड़ देती है। सनातन धर्म इस समस्या का समाधान प्रदान करता है --जप, तप, यज्ञ और ध्यान के माध्यम से। ये प्राचीन सिद्धांत हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक संपूर्ण समाधान प्रदान करते हैं। जप, यानी मंत्रों का उच्चारण, हमारे मन को शांत करता है और आंतरिक शांति एवं ध्यान केंद्रित करने की शक्ति प्रदान करता है। तप,अर्थात् आत्म-संयम, अनुशासन और इच्छाओं पर नियंत्रण रखने का मार्गदर्शन करता है, जिससे असंतोष और व्यर्थ की लालसाओं से मुक्ति मिलती है। यज्ञ, जो श्रम और निःस्वार्थ सेवा का प्रतीक है, शारीरिक गतिविधियों और दूसरों की भलाई के प्रति योगदान के महत्व को दर्शाता है। और अंत में, ध्यान, जो मानसिक और आध्यात्मिक शुद्धिकरण का साधन है, हमें अपने वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है। इन सभी सिद्धांतों को अपनाकर, हम योगमय जीवनशैली अपना सकते हैं, जो भोगवादी (अज्ञानपूर्ण-सुवि धामय-भौतिकवादी) जीवनशैली के विपरीत है। यह न केवल हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की सुरक्षा करती है, बल्कि इस जीवन शैली से पर्यावरण, अन्य प्राणियों और हमारी धरती माँ की भी रक्षा होती है। योगमय जीवनशैली ही हमारी सच्ची संपदा, स्वास्थ्य और आनंद का स्थायी मार्ग है।



शिक्षा:

भारत उदय गुरुकुल के संस्थापक एवं संचालक आईआईटीयन डॉ. रविकांत पाठक हैं। वे विश्व के सबसे बड़े विद्यालय सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ के पूर्व छात्र हैं। बचपन से ही अत्यंत मेधावी छात्र होने के कारण उनका चयन भारत सरकार की आवासीय छात्रवृत्ति परीक्षा में हुआ था। जिसके अंतर्गत उन्होंने इंटरमीडिएट तक की शिक्षा देश के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूलों इंदौर एवं ग्वालियर में भारत सरकार के खर्चे पर प्राप्त की। अपनी लगन के कारण उनका चयन आईआईटी, बम्बई में हुआ तथा वहीं उच्च शिक्षा प्राप्त की।





प्रधान संपादक प्रदीप जी ने ध्यान कार्यशाला, मौन ध्यान, यज्ञ, रात्रि चर्चा, शिक्षकों एवं छात्रों से वार्तालाप आदि में पूरे मनोयोग से भाग लेकर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया।

शहरी प्रदूषण से पूर्णतः मुक्त, प्रकृति की गोद में स्थित भारत उदय गुरुकुल का विशाल परिसर, ग्राम रूरी पारा, जिला हमीरपुर, उ.प्र. लगभग 60 एकड़ भूमि पर फैला प्राकृतिक संपदा से परिपूर्ण है। यह गुरुकुल परिसर पूर्णतः आवासीय है, जो सुंदर शयनकक्ष, स्नानघर, रसोईघर, स्विमिंग पूल, खेल मैदान, जैविक खेती, गौशाला, हरी सब्जियां, कंदीय फल, फलदार वृक्ष, औषधियां और अनेक प्यूपा वृक्षों से सुसज्जित है गुरुकुल में अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, जो यूपी बोर्ड द्वारा कक्षा 1 से 8 तक अंग्रेजी माध्यम के लिए मान्यता प्राप्त है। गुरुकुल में इंटरनेट कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी, प्रयोगशालाओं की सुविधा उपलब्ध है। गुरुकुल के संस्थापक का मानना है कि शिक्षा धन कमाने का साधन नहीं है, बल्कि सेवा, संकल्प, त्याग, परोपकार, चरित्र निर्माण, नैतिकता, मानवता आदि का दर्शन है। यह गुरुकुल द्वारा 6 से 18 वर्ष की आयु के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित है। गौरतलब है कि डॉ रविकांत का 7 वर्षीय

पुत्र, जिसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा यूरोप के एक खूबसूरत देश स्वीडन में प्राप्त की है, वर्तमान में गुरुकुल के छात्रों के साथ रहकर पिछले छह महीनों से भारतीय संस्कृति की शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

3.2 डॉ. रविकांत पाठक के सामाजिक कार्य:

डॉ. रविकांत पाठक "भारत उदय गुरुकुल" के संस्थापक के रूप में एक महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका निभाते हैं। उनके सामाजिक कार्य मुख्य रूप से शिक्षा, संस्कृति, और समाज के समग्र विकास पर केंद्रित हैं। उनके कार्यों का उद्देश्य समाज में नैतिकता, मूल्य आधारित शिक्षा, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण को बढ़ावा देना है।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार:

डॉ. पाठक ने "भारत उदय गुरुकुल" की स्थापना करके समाज में वैदिक और आधुनिक शिक्षा का समन्वय किया है। उनका लक्ष्य उन छात्रों को समग्र शिक्षा देना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास हो। इसके अलावा, वह ग्रामीण और आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुलभ बनाने के प्रयासों में भी लगे हुए हैं।

3.2.2. भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण:

भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिका सराहनीय है। डॉ. पाठक समाज को अपनी जड़ों से जोड़ने के लिए संस्कार और नैतिकता पर जोर देते हैं, जिससे लोग अपनी पहचान और मूल्यों को बनाए रख सकें।

3.2.3. स्वास्थ्य और योग कार्यक्रम:

डॉ. रविकांत पाठक योग और ध्यान के महत्व को समझाते हुए स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रमों का भी आयोजन करते हैं। उनका उद्देश्य शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना और योग को जीवनशैली का हिस्सा बनाना है।

3.2.4. पर्यावरण संरक्षण:

डॉ. पाठक सामाजिक कार्यों में पर्यावरण संरक्षण को भी एक महत्वपूर्ण स्थान देते हैं। वे वृक्षारोपण अभियान,

स्वच्छता अभियान, और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सके।

3.2.5. सामाजिक एकता और समरसता:

समाज में एकता और समरसता को बढ़ावा देने के लिए भी डॉ. पाठक प्रयासरत हैं। वे विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों और सेमिनारों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों को एक साथ लाने और उनमें भाईचारे की भावना पैदा करने का कार्य करते हैं।

3.3 डॉ. रविकांत पाठक का शैक्षिक चिंतन:

डॉ. रविकांत पाठक का शैक्षिक चिंतन एक व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जिसमें भारतीय शिक्षा प्रणाली की प्राचीन परंपराओं को आधुनिकता के साथ समन्वित करने का प्रयास किया गया है। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण भारतीय गुरुकुल प्रणाली की नैतिकता, संस्कार, और आध्यात्मिकता को केंद्र में रखते हुए आधुनिक विज्ञान और तकनीकी शिक्षा के साथ संतुलन बनाता है। वे मानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यावसायिक दक्षता प्राप्त करना नहीं है, बल्कि एक ऐसा समाज बनाना है जो नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त हो।

3.3.1. शिक्षा का समग्र दृष्टिकोण (Holistic Education Approach)

डॉ. रविकांत पाठक का मानना है कि शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के समग्र विकास को सुनिश्चित करना है। उनका यह दृष्टिकोण प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली से प्रेरित है, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास पर समान रूप से ध्यान दिया जाता था। आज की शिक्षा प्रणाली में अक्सर केवल मानसिक विकास पर ध्यान दिया जाता है, जिससे शारीरिक और आध्यात्मिक पहलुओं की अनदेखी होती है। इस कमी को दूर करने के लिए, डॉ. पाठक शिक्षा को एक समग्र प्रक्रिया मानते हैं, जिसमें छात्रों का संपूर्ण विकास होता है।

- **शारीरिक विकास:**

प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली में शारीरिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। योग, ध्यान, और विभिन्न शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को शारीरिक रूप से स्वस्थ और सशक्त बनाया जाता था। डॉ. पाठक

मानते हैं कि शारीरिक स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति की समग्र शिक्षा का अभिन्न अंग है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण माना जाना चाहिए ताकि छात्रों को स्वस्थ शरीर और स्वस्थ मन मिल सके।

- **मानसिक विकास:**

मानसिक विकास किसी भी शिक्षा प्रणाली का प्रमुख अंग होता है। डॉ. पाठक का मानना है कि छात्रों की मानसिक क्षमता को केवल अकादमिक ज्ञान के माध्यम से नहीं बल्कि व्यावहारिक और क्रियात्मक अनुभवों से भी समृद्ध किया जाना चाहिए। उन्हें विश्वास है कि मानसिक विकास के लिए छात्रों को चुनौतीपूर्ण वातावरण में रखा जाना चाहिए, जहां वे सोचने, तर्क करने, और समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित कर सकें।

- **आध्यात्मिक विकास:**

डॉ. रविकांत पाठक के शैक्षिक चिंतन में आध्यात्मिक विकास का प्रमुख स्थान है। उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य न केवल एक अच्छा नागरिक बनाना है, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति बनाना है जो अपने आंतरिक गुणों को समझ सके और अपनी आत्मा की शक्ति को पहचान सके। आध्यात्मिक विकास से व्यक्ति में आंतरिक शांति, संयम, और अनुशासन का विकास होता है, जो जीवन में कठिनाइयों का सामना करने के लिए आवश्यक है।

3.3.2. नैतिक शिक्षा (Moral Education)

नैतिक शिक्षा डॉ. पाठक के शैक्षिक चिंतन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है। उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना और ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति में नैतिकता और सदाचार का विकास करना भी है। आज की शिक्षा प्रणाली में, जहां प्रतिस्पर्धा और व्यावसायिक दक्षता को अधिक महत्व दिया जाता है, नैतिक मूल्यों की उपेक्षा हो रही है। यह समाज में बढ़ते अपराध, भ्रष्टाचार, और असंवेदनशीलता का एक प्रमुख कारण है।

3.3.2.1. नैतिक शिक्षा के लक्ष्य:

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा: डॉ. पाठक के अनुसार, शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, और नैतिक मूल्यों का विकास करना है। इन गुणों से लैस व्यक्ति समाज के लिए एक आदर्श नागरिक बन सकता है।

जिम्मेदारी और समाज सेवा: उनका मानना है कि शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनाना है, जो समाज की भलाई के लिए काम करें। इसके लिए नैतिक शिक्षा के माध्यम से उनमें समाज सेवा की भावना विकसित की जानी चाहिए।

आत्म-नियंत्रण और अनुशासन: नैतिक शिक्षा के माध्यम से आत्म-नियंत्रण और अनुशासन को भी बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आज के समय में जहां छात्रों पर कई तरह के बाहरी प्रभाव होते हैं, उन्हें आत्म-नियंत्रण और संयम सिखाना जरूरी है, ताकि वे अपने जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ सकें।

3.3.3. गुरुकुल पद्धति का पुनरुद्धार (Revival of Gurukul System)

डॉ. रविकांत पाठक का शैक्षिक चिंतन भारतीय गुरुकुल पद्धति के पुनरुद्धार की बात करता है। उनका मानना है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में गुरुकुल पद्धति के कई महत्वपूर्ण तत्व खो गए हैं। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल अकादमिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि छात्रों के संपूर्ण विकास पर जोर दिया जाता था। इसमें गुरु-शिष्य परंपरा, व्यक्तिगत ध्यान, और शारीरिक, मानसिक, और आध्यात्मिक विकास के लिए संतुलित दृष्टिकोण का पालन किया जाता था।

गुरु-शिष्य परंपरा:

गुरुकुल प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता थी गुरु-शिष्य परंपरा, जिसमें गुरु (शिक्षक) छात्रों को न केवल शिक्षा देते थे, बल्कि उनके जीवन के हर पहलू में मार्गदर्शन करते थे। डॉ. पाठक मानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षक और छात्रों के बीच यह व्यक्तिगत संबंध कहीं न कहीं कमजोर हो गया है। उनके अनुसार, शिक्षक का काम केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि छात्रों के चरित्र, नैतिकता, और जीवन मूल्यों का भी निर्माण करना है।

व्यक्तिगत मार्गदर्शन:

गुरुकुल प्रणाली में छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन मिलता था, जिससे उनकी क्षमताओं और रुचियों का समुचित विकास होता था। डॉ. पाठक का मानना है कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी इस व्यक्तिगत ध्यान को शामिल किया जाना चाहिए, ताकि प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और प्रतिभाओं का विकास हो सके।

3.3.4. भारतीय संस्कृति और परंपराओं का संरक्षण (Preservation of Indian Culture and Traditions)

डॉ. रविकांत पाठक का शैक्षिक चिंतन भारतीय संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण पर भी जोर देता है। उनका मानना है कि शिक्षा केवल आधुनिक विज्ञान और तकनीकी पर आधारित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे हमारी सांस्कृतिक धरोहर और परंपराओं को भी संरक्षित करना चाहिए। वे मानते हैं कि भारतीय शिक्षा प्रणाली को इस तरह से डिजाइन किया जाना चाहिए, जिससे छात्र न केवल वैश्विक नागरिक बनें, बल्कि अपने सांस्कृतिक मूल्यों और धरोहर को भी समझें और उसका पालन करें।

सांस्कृतिक शिक्षा:

डॉ. पाठक के अनुसार, शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों को अपनी संस्कृति, इतिहास, और परंपराओं से अवगत कराना होना चाहिए। इसके लिए शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम में भारतीय संस्कृति, कला, संगीत, और साहित्य का समावेश किया जाना चाहिए। इससे छात्रों में अपनी जड़ों के प्रति गर्व और आदर की भावना विकसित होगी।

आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्य:

डॉ. पाठक का मानना है कि शिक्षा के माध्यम से छात्रों को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए। यह उन्हें न केवल एक सफल व्यक्ति बनाएगा, बल्कि एक अच्छा इंसान और समाज का सशक्त सदस्य भी बनाएगा। उनकी दृष्टि में, शिक्षा केवल व्यक्तिगत विकास के लिए नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी होनी चाहिए।

3.3.5. आधुनिक शिक्षा और प्राचीन ज्ञान का समन्वय (Integration of Modern and Ancient Knowledge)

डॉ. रविकांत पाठक के शैक्षिक चिंतन में आधुनिक और प्राचीन शिक्षा के समन्वय पर जोर दिया गया है। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य न केवल पुरानी परंपराओं और मूल्यों को सहेजना है, बल्कि इसे आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप भी बनाना है। उनका मानना है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली में जो ज्ञान था, उसे आज के विज्ञान और तकनीकी के साथ जोड़कर अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

विज्ञान और तकनीकी शिक्षा:

डॉ. पाठक मानते हैं कि आज के समय में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा का महत्व बहुत बढ़ गया है। छात्रों को इन विषयों में निपुण बनाना आवश्यक है ताकि वे आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना कर सकें। लेकिन उनका यह भी मानना है कि इस शिक्षा को नैतिकता, आध्यात्मिकता, और संस्कारों के साथ जोड़ा जाना चाहिए, ताकि छात्र अपने ज्ञान का सही उपयोग कर सकें।

प्राचीन भारतीय ज्ञान:

भारत की प्राचीन शिक्षा प्रणाली में चिकित्सा, गणित, खगोलशास्त्र, और योग जैसे विषयों का गहरा ज्ञान था। डॉ. पाठक का मानना है कि इन विषयों का आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समावेश किया जाना चाहिए, ताकि छात्र हमारे प्राचीन ज्ञान का लाभ उठा सकें और इसे आधुनिक समय की जरूरतों के अनुसार उपयोग कर सकें।

3.4 शैक्षिक चिंतन में समाजिकता का प्रवेश:

डॉ. रविकांत पाठक के शैक्षिक चिंतन में समाजिकता का प्रवेश शिक्षा के एक व्यापक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है, जिसमें केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं, बल्कि समाज की भलाई और विकास को भी महत्वपूर्ण माना जाता है। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य समाज के प्रति जिम्मेदार, नैतिक, और संवेदनशील नागरिकों का निर्माण करना है, जो समाजिकता के मूल्यों को समझें और उनका पालन करें।

उनका यह दृष्टिकोण प्राचीन गुरुकुल प्रणाली से प्रेरित है, जिसमें समाजिकता और नैतिकता को शिक्षा का अभिन्न अंग माना जाता था। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी समाजिकता का समावेश आवश्यक है, ताकि छात्रों में सामाजिक जागरूकता, नैतिकता, और समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो सके।

डॉ. रविकांत पाठक के शैक्षिक चिंतन में सामाजिकता का प्रवेश एक महत्वपूर्ण और गहरा विचार है। उनका शैक्षिक दृष्टिकोण केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जो नैतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक रूप से समृद्ध हो। उनके शैक्षिक दृष्टिकोण में सामाजिकता का अर्थ है समाज के प्रति व्यक्ति की जिम्मेदारियों को समझना, सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देना, और शिक्षा के माध्यम से समाज की भलाई के लिए कार्य करना।

डॉ. पाठक मानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पेशेवर कौशल और जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि यह छात्रों को समाज के साथ जुड़ने और उसमें सकारात्मक योगदान देने के लिए तैयार करना भी है। उनका विचार है कि समाजिकता का विकास शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है और इसे छात्रों के चरित्र निर्माण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए।

1. शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य

डॉ. रविकांत पाठक के अनुसार, शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज के प्रति व्यक्ति की जागरूकता और उसकी भूमिका को समझाना है। वे मानते हैं कि शिक्षा केवल व्यक्तिगत लाभ तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका उद्देश्य समाज में सामंजस्य, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना को प्रोत्साहित करना होना चाहिए। समाजिकता का अर्थ है, समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति संवेदनशीलता, समाज के विकास में योगदान और सामुदायिक सहयोग की भावना का विकास करना।

उनके अनुसार, छात्रों को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझना चाहिए और उन्हें अपने ज्ञान का उपयोग केवल अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं, बल्कि समाज की भलाई के लिए करना चाहिए। इस दृष्टिकोण से, शिक्षा का उद्देश्य न केवल व्यक्तियों का विकास करना है, बल्कि समाज को भी बेहतर बनाना है।

2. नैतिक शिक्षा और सामाजिकता

डॉ. पाठक के शैक्षिक चिंतन में नैतिक शिक्षा का प्रमुख स्थान है। उनका मानना है कि नैतिकता और समाजिकता का गहरा संबंध है। बिना नैतिक मूल्यों के, समाजिकता को सही तरीके से विकसित नहीं किया जा सकता। इसलिए, शिक्षा में नैतिकता का समावेश अत्यंत आवश्यक है। नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों को ईमानदारी, सत्य, अनुशासन, और परस्पर सम्मान के महत्व को समझाया जाना चाहिए।

उनका यह भी मानना है कि शिक्षा के माध्यम से नैतिकता का विकास न केवल व्यक्तिगत चरित्र निर्माण के लिए जरूरी है, बल्कि यह समाज में सद्भाव और सामंजस्य स्थापित करने के लिए भी आवश्यक है। समाज में नैतिकता का प्रचार-प्रसार शिक्षा के माध्यम से ही किया जा सकता है, और यह छात्रों को समाज के प्रति उनके दायित्वों को समझने और उसे पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

3. गुरुकुल प्रणाली और सामाजिकता

डॉ. पाठक का शैक्षिक दृष्टिकोण प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली से गहरे रूप से प्रभावित है, जिसमें सामाजिकता का विकास शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि छात्रों के चरित्र, नैतिकता, और समाजिकता का विकास करना भी था।

गुरुकुल प्रणाली में छात्रों को न केवल विषयों की शिक्षा दी जाती थी, बल्कि उन्हें समाज के प्रति अपने कर्तव्यों को समझने और उन्हें निभाने के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता था। इस प्रणाली में शिक्षक (गुरु) छात्रों के लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा स्रोत होते थे, जो उन्हें न केवल अकादमिक शिक्षा देते थे, बल्कि जीवन के नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी बोध कराते थे।

डॉ. पाठक मानते हैं कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भी गुरुकुल प्रणाली के इस महत्वपूर्ण पहलू को अपनाया जाना चाहिए, ताकि छात्रों में समाजिकता और नैतिकता का विकास हो सके।

4. समाजिकता के घटक

डॉ. पाठक के शैक्षिक चिंतन में समाजिकता को विभिन्न घटकों में विभाजित किया जा सकता है, जो शिक्षा के माध्यम से छात्रों में विकसित किए जा सकते हैं। इनमें प्रमुख हैं:-

(i) सामुदायिक सहयोग

सामुदायिक सहयोग का अर्थ है, समाज के विभिन्न वर्गों के साथ मिलकर काम करना और समाज की भलाई के लिए सहयोग करना। शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में इस भावना का विकास करना होना चाहिए कि वे समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और उनका कर्तव्य है कि वे समाज की समस्याओं के समाधान में योगदान दें।

(ii) सामाजिक न्याय

डॉ. पाठक का मानना है कि शिक्षा के माध्यम से सामाजिक न्याय की भावना को भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। छात्रों को यह सिखाया जाना चाहिए कि समाज के सभी वर्गों को समान अवसर मिलने चाहिए और किसी भी प्रकार का भेदभाव अस्वीकार्य है। शिक्षा के माध्यम से छात्रों को यह समझाया जा सकता है कि वे अपने समाज में सामाजिक न्याय के लिए कैसे योगदान दे सकते हैं।

(iii) संवेदनशीलता और करुणा

समाजिकता का एक महत्वपूर्ण घटक है संवेदनशीलता और करुणा। डॉ. पाठक मानते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य छात्रों में करुणा, सहानुभूति, और दूसरों की समस्याओं को समझने की क्षमता का विकास करना भी होना चाहिए। यह संवेदनशीलता उन्हें समाज के कमजोर वर्गों की समस्याओं के प्रति जागरूक बनाएगी और उन्हें उनकी मदद के लिए प्रेरित करेगी।

5. समाजिकता और आधुनिक शिक्षा प्रणाली

डॉ. पाठक के अनुसार, आधुनिक शिक्षा प्रणाली में समाजिकता का प्रवेश एक महत्वपूर्ण चुनौती है। आज की शिक्षा प्रणाली में अक्सर प्रतियोगिता और व्यावसायिक दक्षता पर अधिक ध्यान दिया जाता है, जिसके कारण समाजिकता के मूल्यों की उपेक्षा होती है।

उनका मानना है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार करना नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें एक अच्छे नागरिक बनने के लिए भी तैयार करना चाहिए। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षा में समाजिकता के मूल्यों को भी शामिल किया जाए।

(i) पाठ्यक्रम में समाजिकता का समावेश

डॉ. पाठक का मानना है कि समाजिकता के विकास के लिए शिक्षा के पाठ्यक्रम में समाजिकता से जुड़े विषयों का समावेश किया जाना चाहिए। छात्रों को सामाजिक न्याय, नैतिकता, और सामाजिक उत्तरदायित्व के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए।

(ii) प्रायोगिक शिक्षा

डॉ. पाठक यह भी मानते हैं कि समाजिकता के विकास के लिए प्रायोगिक शिक्षा महत्वपूर्ण है। छात्रों को कक्षा के बाहर के समाजिक कार्यों में भाग लेने के अवसर दिए जाने चाहिए। इससे न केवल उनकी शैक्षणिक क्षमता में वृद्धि होगी, बल्कि वे समाज की वास्तविक समस्याओं को समझने और उनके समाधान के लिए प्रयास करने के लिए भी प्रेरित होंगे।

6. शिक्षा में समाजिकता की चुनौतियाँ

डॉ. पाठक मानते हैं कि शिक्षा में समाजिकता का प्रवेश कई चुनौतियों के साथ आता है। इनमें प्रमुख हैं:

(i) व्यक्तिगत सफलता पर अधिक ध्यान

आधुनिक समाज में व्यक्तिगत सफलता पर अधिक जोर दिया जाता है, जिसके कारण समाजिकता के मूल्यों की उपेक्षा होती है। शिक्षा प्रणाली में भी अक्सर इस बात पर अधिक ध्यान दिया जाता है कि छात्र व्यक्तिगत रूप से कितने सफल होते हैं, बजाय इसके कि वे समाज में क्या योगदान देते हैं।

(ii) नैतिकता का अभाव

आज की शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता, जिसके कारण समाजिकता का विकास नहीं हो पाता। डॉ. पाठक का मानना है कि शिक्षा में नैतिकता का समावेश अत्यंत आवश्यक है, ताकि समाजिकता का विकास हो सके।

7. समाजिकता के भविष्य के प्रति दृष्टिकोण

डॉ. पाठक का मानना है कि भविष्य में शिक्षा में समाजिकता का महत्व और भी बढ़ेगा। आज के वैश्विक और तकनीकी युग में, जहां समाज तेजी से बदल रहा है, समाजिकता के मूल्यों की आवश्यकता और भी अधिक हो गई है।

उनके अनुसार, समाजिकता के बिना समाज में स्थिरता और शांति बनाए रखना कठिन हो जाएगा। शिक्षा के माध्यम से समाजिकता का विकास किया जा सकता है, जिससे एक न्यायपूर्ण, समान, और सहयोगपूर्ण समाज का निर्माण हो सकेगा।

चतुर्थ अध्याय : भारत उदय गुरुकुल का परिचयात्मक विवरण

4.1 गुरुकुल की स्थापना

4.2 भारत उदय गुरुकुल की अवस्थित

4.3 गुरुकुल का उद्देश्य

4.4 गुरुकुल का वातावरण

4.5. गुरुकुल में प्रवेश प्रक्रिया

4.6. गुरुकुल भवन

4.7 गुरुकुल कक्षा-कक्ष

4.8 पुस्तकालय

4.9 ध्यान केंद्र स्थल

4.10 भोजन व्यवस्था

4.11 प्रार्थना स्थल

4.12 खेल स्थल

4.13 गुरुकुल छात्रावास

4.14 वेब साइटस:

चतुर्थ अध्याय

भारत उदय गुरुकुल का परिचयात्मक विवरण

4.1. गुरुकुल की स्थापना:

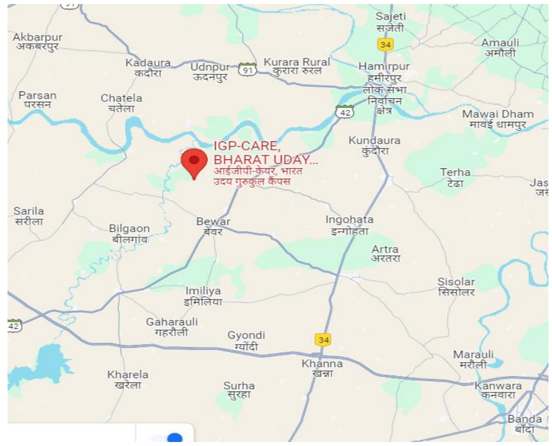
भारत उदय गुरुकुल की स्थापना भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार और सांस्कृतिक पुनरुत्थान की आवश्यकता को समझते हुए की गई। आज के युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रह गया है; बल्कि यह विद्यार्थियों में नैतिकता, संस्कृति, और समाज के प्रति जागरूकता का विकास करना भी आवश्यक हो गया है। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, भारत उदय गुरुकुल की स्थापना एक सशक्त और संतुलित शिक्षा प्रणाली के रूप में की गई है।

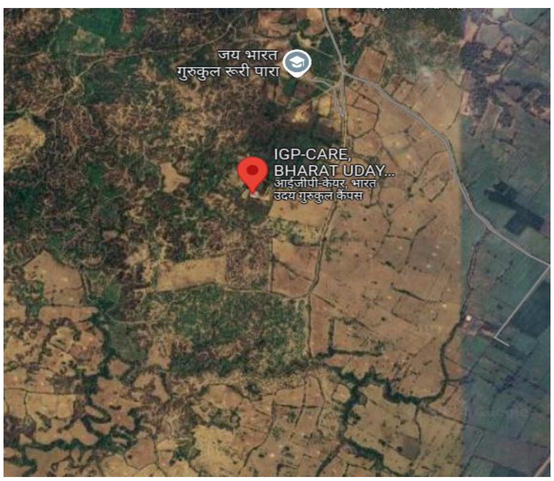
अमेरिका में पोस्टडॉक्टरल के रूप में काम करते हुए, वे गांधीजी के जीवन से प्रेरित हुए और भारत में सामाजिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू किया। 2007 में, डॉ. रविकांत ने एक स्थिरता केंद्र (भारत उदय कर्मयोगी आश्रम) की स्थापना की और 2010 में ग्रामीण भारत में वंचित समुदायों के लिए एक आवासीय विद्यालय (भारत उदय गुरुकुल) की नींव रखी ताकि सामाजिक और स्थिरता के मुद्दों पर काम करने वाले समान विचारधारा वाले लोगों को एकजुट किया जा सके। 2014 में, उन्होंने अमेरिका में अनिवासी भारतीयों को एकजुट करने और उन्हें ग्रामीण भारत के सकारात्मक समग्र परिवर्तन में योगदान देने के लिए प्रेरित करने के लिए सिलिकॉन वैली में SEED फाउंडेशन की स्थापना की। ग्रामीण भारत बहुत विविध और जटिल है, जो नीतियों और समाधानों के कार्यान्वयन में कई बाधाएं प्रस्तुत करता है। हालाँकि, समग्र ग्रामीण परिवर्तन तत्काल आवश्यक है भारत का समग्र विकास। डॉ. रविकांत का मिशन ग्रामीण लोगों के बीच सामाजिक-आर्थिक असमानता, ईमानदारी की कमी, नैतिक विश्वास और आचार-विचार को दूर करने के लिए काम कर रहा है। दीर्घकालिक लक्ष्य बच्चों को चरित्र निर्माण गुरुकुल प्रणाली में शिक्षित करके उनमें इन मूल्यों को विकसित करना, व्यावसायिक प्रशिक्षण और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाना और महिलाओं, किसानों और ग्रामीण उद्यमियों के लिए आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने वाला एक टिकाऊ मॉडल विकसित करना है। इसे उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड के हमीरपुर, बांदा और महोबद जिलों के गांवों के समूह में पांच भारत उदय केंद्र स्थापित करके लागू किया गया है।

4.2 भारत उदय गुरुकुल की अवस्थित:

भारत उदय गुरुकुल हमीरपुर, उत्तर प्रदेश में स्थित है।









4.3 गुरुकुल का उद्देश्य:

भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल एक अनूठी शैक्षिक पहल है जो भारतीय शिक्षा की प्राचीन परंपराओं और आधुनिक शिक्षा प्रणाली के तत्वों को सम्मिलित करते हुए शिक्षा के उच्चतम मानकों को स्थापित करने का लक्ष्य रखती है। इसका उद्देश्य न केवल शैक्षिक विकास को प्रोत्साहित करना है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक, आध्यात्मिक, और सामाजिक मूल्यों का विकास करना भी है। यह गुरुकुल भारतीय परंपराओं की समृद्ध धरोहर के साथ विद्यार्थियों को आधुनिक समाज में प्रासंगिक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करता है।

इस गुरुकुल का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य समाज के प्रत्येक स्तर पर संतुलित और समर्थ नेतृत्व का निर्माण करना है। यह शिक्षा के माध्यम से भारतीय संस्कृति, सभ्यता और मूल्यों के पुनर्निर्माण की दिशा में अग्रसर है।

भारत उदय गुरुकुल का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ना है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली, विशेष रूप से गुरुकुल प्रणाली, में गुरु-शिष्य परंपरा, नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान था। दूसरी ओर, आधुनिक शिक्षा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और वैश्विक दृष्टिकोण पर अधिक जोर दिया जाता है। गुरुकुल इन दोनों प्रणालियों के सर्वोत्तम पहलुओं को एकीकृत करती है ताकि विद्यार्थियों को शिक्षा के व्यापक और समग्र स्वरूप की प्राप्ति हो सके।

गुरुकुल प्रणाली की विशेषताएँ:-

- नैतिक और सांस्कृतिक शिक्षा।
- गुरु-शिष्य का गहरा संबंध।
- शिक्षा के साथ योग, ध्यान और आत्मअनुशासन का समावेश।
- प्रकृति के साथ सामंजस्य और समर्पण की भावना।
- आधुनिक शिक्षा प्रणाली की विशेषताएँ:
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
- तर्कसंगतता और विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास।
- तकनीकी ज्ञान और कौशल।
- वैश्विक दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी की समझ।
- भारत उदय गुरुकुल इन दोनों प्रणालियों का संगम करता है और एक ऐसी शिक्षा प्रणाली प्रस्तुत करता है जो न केवल ज्ञान का संचार करती है, बल्कि विद्यार्थियों को समाज के प्रति जागरूक, जिम्मेदार और सेवा-भाव से युक्त नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है।

- गुरुकुल गुरुकुल का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य विद्यार्थियों में नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास करना है। आधुनिक समाज में नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य संकट में हैं।
- भौतिकवाद और प्रतिस्पर्धा की होड़ ने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में संतुलन बिगाड़ दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में, भारत उदय गुरुकुल विद्यार्थियों को नैतिकता, ईमानदारी, और समाज के प्रति जिम्मेदारी के महत्व को समझाने के लिए विशेष शिक्षा प्रदान करता है।
- ईमानदारी, सत्यनिष्ठा और नैतिकता जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए आवश्यक हैं।
- विद्यार्थी जब नैतिक मूल्यों से युक्त होते हैं, तो वे व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं।
- गुरुकुल का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल शैक्षिक रूप से सफल बनाना नहीं है, बल्कि उन्हें नैतिक रूप से भी समृद्ध बनाना है।
- आत्म-ज्ञान और आत्म-चिंतन की प्रक्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी अपने भीतर की क्षमताओं को पहचानते हैं।
- ध्यान और योग जैसी विधियों के माध्यम से मानसिक शांति और आत्म-नियंत्रण का विकास किया जाता है।
- आध्यात्मिकता से छात्रों को अपने जीवन में संतुलन और स्थिरता प्राप्त करने में मदद मिलती है।
- भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल का एक और प्रमुख उद्देश्य भारतीय संस्कृति, संस्कारों और परंपराओं को पुनर्जीवित और संरक्षित करना है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय मूल्यों और संस्कृति की उपेक्षा ने समाज में सांस्कृतिक संकट पैदा कर दिया है।
- ऐसे में, इस गुरुकुल का लक्ष्य छात्रों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता के प्रति गर्व का भाव विकसित करना है।
- विद्यार्थियों में आत्मानुशासन, विनम्रता, और सेवा-भाव का विकास करना।
- पारिवारिक और सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाना।

- जीवन में संतुलन और स्थिरता बनाए रखने के लिए धर्म और अध्यात्म की भूमिका को समझना।
- समाज सेवा से विद्यार्थी समाज की समस्याओं को समझते हैं और उन्हें हल करने के लिए अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं।
- समाज में व्याप्त असमानताओं, गरीबी, और अन्य समस्याओं के प्रति जागरूकता बढ़ती है।
- समाज सेवा से विद्यार्थियों में सहानुभूति, करुणा और मानवता के प्रति आदर की भावना विकसित होती है।
- नवीनतम तकनीकी शिक्षा प्रदान करना।
- विज्ञान के प्रति जागरूकता और समझ विकसित करना।
- विद्यार्थियों को प्रौद्योगिकी के नैतिक और सामाजिक प्रभावों के प्रति जागरूक करना।
- गुरुकुल का मानना है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बिना किसी भी समाज का आर्थिक और सामाजिक विकास अधूरा है। इसलिए, यहां यह सुनिश्चित किया जाता है कि विद्यार्थी आधुनिक विज्ञान और तकनीक में भी दक्ष हों, ताकि वे वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार हो सकें।
- गुरुकुल का उद्देश्य ऐसे छात्रों को तैयार करना है जो भविष्य में समाज के विभिन्न क्षेत्रों में नैतिक और सकारात्मक नेतृत्व प्रदान कर सकें।

4.4 गुरुकुल का वातावरण

भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल का वातावरण एक समग्र विकास का मंच प्रदान करता है, जहां विद्यार्थी न केवल ज्ञान और कौशल प्राप्त करते हैं, बल्कि नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी विकास करते हैं। यह वातावरण विद्यार्थियों को प्रेरित करता है, उन्हें आत्म-विश्वास प्रदान करता है, और उन्हें एक जिम्मेदार और सक्षम नागरिक बनाने की दिशा में अग्रसर करता है। इस प्रकार, भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल का वातावरण एक आदर्श शैक्षणिक संस्थान की पहचान बनाता है। गुरुकुल गुरुकुल का प्राकृतिक वातावरण छात्रों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए अनुकूल है।

गुरुकुल का परिसर हरा-भरा और शांतिपूर्ण है, जहां वृक्षों, पौधों और फूलों की भरपूर उपस्थिति है। यह न केवल विद्यार्थियों को शारीरिक स्वास्थ्य के लिए प्रेरित करता है, बल्कि मानसिक शांति भी प्रदान करता है।

गुरुकुल में खेल के लिए विशेष स्थान निर्धारित किया गया है, जहां विद्यार्थी विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह न केवल उनके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है, बल्कि टीम वर्क और सहयोग की भावना को भी विकसित करता है।



गुरुकुल गुरुकुल में भारतीय संस्कृति और परंपरा का गहरा प्रभाव है, जो विद्यार्थियों में सांस्कृतिक जागरूकता और गर्व का भाव विकसित करता है। नियमित रूप से सांस्कृतिक कार्यक्रम, जैसे कि संगीत, नृत्य, और नाटक आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विद्यार्थी अपनी प्रतिभा दिखाते हैं। यह उन्हें अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और सम्मानित करने में मदद करता है। ध्यान और योग सत्र भी नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जो विद्यार्थियों को मानसिक शांति और आत्म-नियंत्रण की क्षमता प्रदान करते हैं।



गुरुकुल में एक उत्कृष्ट शैक्षणिक वातावरण है, जो विद्यार्थियों को उच्चतम शैक्षिक मानकों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है। विद्यार्थियों को अपने विचारों और सवालों को खोजने और अनुसंधान करने की स्वतंत्रता दी जाती है, जिससे उनका विश्लेषणात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल विकसित होता है। शैक्षिक वातावरण में आधुनिक तकनीकों का समावेश किया गया है, जैसे कि स्मार्ट क्ला सरूम और डिजिटल संसाधन, जो विद्यार्थियों के लिए शिक्षा को और अधिक रोचक और प्रभावी बनाते हैं।

4.5. गुरुकुल में प्रवेश प्रक्रिया:

1. गुरुकुल में प्रवेश की कोई निश्चित समय अवधि नही है। ज्योतिष शास्त्र के आधार पर योग्य मुहूर्त देखकर प्रवेश दिया जाता है।
2. गुरुकुल मे 8-12 साल के छात्रों को प्रवेश दिया जाता है।
3. विद्यार्थी प्रवेश-पत्र और जन्मपत्रिका के आधार पर अस्थायी (ट्रायल) प्रवेश दिया जाता है अस्थायी प्रवेश उर्तीण होने के बाद स्थायी प्रवेश दिया जाता है।
4. गुरुकुल में शिक्षा, आवास एवं भोजन निःशुलक है।
5. प्रतेश के नाद गुरुकुल मे अभ्यासकाल की अवधि 10-12 वर्ष की रहती है।
6. गुरुकुल की महत्ता को देखते हुए यहाँ बच्चों के प्रवेश की कतार लगी है।

4.6. गुरुकुल भवन:




भारत उदय गुरुकुल का भवन शैक्षिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को एक शांतिपूर्ण, प्रेरणादायक और ज्ञानमूलक वातावरण प्रदान करना है, जहाँ वे न केवल अकादमिक शिक्षा प्राप्त कर सकें, बल्कि नैतिकता, संस्कृति और समाजिक जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक बनें। गुरुकुल भवन की वास्तुकला प्राकृतिक सौंदर्य और भारतीय परंपराओं का अद्भुत मिश्रण है। इसमें वास्तुकला के प्राचीन भारतीय तत्वों का समावेश किया गया है जो इसे विशेष और अनूठा बनाता है। गुरुकुल का भवन प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ है, जिसमें विशाल हरियाली, पेड़-पौधे, और

बगीचे शामिल हैं। भवन का निर्माण इस प्रकार किया गया है कि विद्यार्थियों को प्रकृति के करीब रहकर शिक्षा प्राप्त करने का अनुभव हो।

भवन का निर्माण भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार किया गया है, जिससे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह विद्यार्थियों और शिक्षकों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। गुरुकुल भवन की डिज़ाइन में पारंपरिक भारतीय मंदिरों और आश्रमों की स्थापत्य शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। ऊँचे गुंबद, खुले प्रांगण, और स्तंभों के साथ बनाया गया यह भवन एक अद्वितीय शैक्षिक केंद्र का प्रतीक है।

गुरुकुल भवन में आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का समावेश किया गया है। यह भवन विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक और मानसिक विकास के लिए एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है। कक्षाएँ बड़ी, हवादार और प्राकृतिक रोशनी से भरपूर हैं। हर कक्षा को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि विद्यार्थियों को पढ़ाई के दौरान एक शांत और प्रेरणादायक वातावरण मिले।

भवन में आधुनिक तकनीक से सुसज्जित स्मार्ट क्लासरूम की व्यवस्था है, जहाँ पर विद्यार्थी डिजिटल शिक्षा और प्रौद्योगिकी का लाभ उठा सकते हैं। एक विशाल और समृद्ध पुस्तकालय है, जिसमें प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। यह विद्यार्थियों के ज्ञान को विस्तारित करने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन केंद्र है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी की शिक्षा के लिए विशेष रूप से आधुनिक प्रयोगशालाएँ बनाई गई हैं, जहाँ विद्यार्थी अपने व्यावहारिक कौशलों का विकास कर सकते हैं।

गुरुकुल का भवन विद्यार्थियों में आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के विकास पर विशेष जोर देता है। इसके लिए भवन में विशेष स्थान और सुविधाएँ बनाई गई हैं। एक विशाल योग और ध्यान केंद्र बनाया गया है, जहाँ विद्यार्थी नियमित रूप से ध्यान और योग के माध्यम से मानसिक शांति और आत्म-नियंत्रण का अभ्यास कर सकते हैं। भवन में एक बड़ा सांस्कृतिक हॉल है, जहाँ विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। यह हॉल भारतीय नृत्य, संगीत, और नाटक जैसी पारंपरिक कलाओं को सीखने और प्रदर्शित करने का एक मंच प्रदान करता है।

भवन के बाहर और आसपास के क्षेत्रों में भी विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए विभिन्न सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। विद्यार्थियों के शारीरिक विकास और खेलकूद के लिए एक विशाल खेल

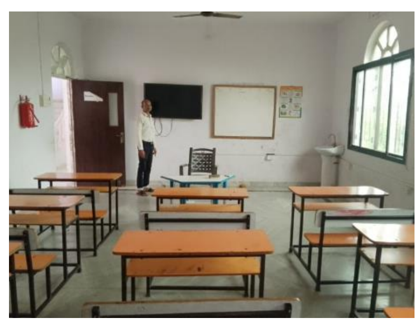
का मैदान है। इसमें विभिन्न खेलों, जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, और वॉलीबॉल की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। भवन के चारों ओर सुंदर बगीचे और हरियाली से भरे क्षेत्र हैं, जहाँ विद्यार्थी प्रकृति के साथ समय बिता सकते हैं और पर्यावरण के प्रति जागरूक हो सकते हैं।

गुरुकुल भवन को पर्यावरण-संवेदनशील दृष्टिकोण के साथ डिज़ाइन किया गया है। इसमें प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम उपयोग किया गया है, जिससे ऊर्जा और जल संरक्षण सुनिश्चित हो सके। भवन में सौर ऊर्जा का उपयोग किया जाता है, जिससे बिजली की बचत होती है और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा मिलता है। भवन में वर्षा जल संचयन की व्यवस्था है, जिससे जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं।

भवन का वातावरण इस प्रकार बनाया गया है कि विद्यार्थियों में शैक्षिक उन्नति के साथ-साथ नैतिक और सामाजिक मूल्यों का भी विकास हो। भवन के दीवारों पर प्रेरणादायक विचार, महापुरुषों की तस्वीरें, और भारतीय सांस्कृतिक धरोहरों की झलकियाँ प्रदर्शित की गई हैं, जो विद्यार्थियों को प्रेरित करती हैं।

भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल का भवन एक आदर्श शैक्षणिक केंद्र के रूप में स्थापित किया गया है। यह न केवल शिक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण प्रदान करता है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक विकास को भी प्रोत्साहित करता है। इसके भवन की संरचना और वातावरण विद्यार्थियों को प्रेरणा देने के साथ-साथ उन्हें एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

4.7 कक्षा-कक्ष:



भारत उदय गुरुकुल के कक्षा-कक्ष विद्यार्थियों को एक शैक्षिक, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। यहाँ की कक्षाओं का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गुरुकुल के कक्षा-कक्षों की संरचना और डिज़ाइन विद्यार्थी-केंद्रित और सुविधाजनक है, जो उनके सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाता है।

कक्षाओं को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि उनमें भरपूर प्राकृतिक रोशनी और ताज़ा हवा का प्रवाह हो। यह विद्यार्थियों को एक स्वस्थ और सकारात्मक वातावरण में सीखने का अवसर प्रदान करता है। कक्षा-कक्षों का आकार बड़ा और हवादार है, जिससे विद्यार्थियों को पढ़ाई करते समय किसी भी प्रकार की भीड़ या असुविधा महसूस नहीं होती। छात्रों के बैठने के लिए पर्याप्त स्थान और आरामदायक कुर्सियाँ और डेस्क उपलब्ध हैं। कक्षा-कक्षों में आधुनिक शैक्षिक उपकरणों का समावेश किया गया है, जैसे कि प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, और ऑडियो-विजुअल तकनीक। यह शिक्षण को अधिक प्रभावी और आकर्षक बनाने में सहायक हैं।



4.8 पुस्तकालय:

भारत उदय गुरुकुल का पुस्तकालय एक समृद्ध और ज्ञानवर्धक केंद्र है, जो विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक, नैतिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने का लक्ष्य रखता है। यह पुस्तकालय न केवल शैक्षिक सामग्री का भंडार है, बल्कि यह एक ऐसा स्थान भी है जहाँ विद्यार्थी स्वाध्याय, चिंतन और आत्म-निर्माण के लिए समय व्यतीत कर सकते हैं।

पुस्तकालय का डिज़ाइन इस प्रकार किया गया है कि यह विद्यार्थियों के लिए एक शांतिपूर्ण और प्रेरणादायक अध्ययन स्थल के रूप में कार्य कर सके। इसमें कई सुविधाएं और संसाधन उपलब्ध हैं जो छात्रों को पढ़ाई और अनुसंधान के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पुस्तकालय का परिसर विशाल और हवादार है, जिससे विद्यार्थियों को आरामदायक माहौल मिलता है। पर्याप्त प्राकृतिक रोशनी के साथ यहाँ अध्ययन के लिए उचित स्थान और बैठने की व्यवस्था उपलब्ध है।



पुस्तकालय में व्यक्तिगत अध्ययन के लिए अलग-अलग क्षेत्रों की व्यवस्था की गई है, जहाँ विद्यार्थी शांति से पढ़ाई कर सकते हैं। इसके अलावा, समूह अध्ययन के लिए विशेष कक्ष उपलब्ध हैं, जहाँ विद्यार्थी आपस में विचार-विमर्श और चर्चा कर सकते हैं। पुस्तकालय का डिज़ाइन आधुनिक शैक्षणिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है, जिसमें डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट की सुविधा का भी समावेश है।

गुरुकुल के पुस्तकालय में विभिन्न विषयों से संबंधित पुस्तकों का एक विशाल संग्रह है, जो विद्यार्थियों को उनके शैक्षणिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए सहायता प्रदान करता है। विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, और अन्य विषयों की पाठ्यपुस्तकों के अलावा, शोधपरक और संदर्भ पुस्तकों का भी एक विस्तृत संग्रह है। यह विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रम के अलावा अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

पुस्तकालय में विभिन्न धर्मों, दर्शन, और नैतिकता पर आधारित साहित्य भी उपलब्ध है। भगवद गीता, रामायण, महाभारत, उपनिषद, और अन्य धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ नैतिक शिक्षा से संबंधित पुस्तकें विद्यार्थियों को जीवन के गहरे आध्यात्मिक और नैतिक सिद्धांतों से अवगत कराती हैं। भारतीय इतिहास, संस्कृति, और परंपराओं पर आधारित पुस्तकें भी पुस्तकालय में प्रमुखता से उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों के माध्यम से विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और उसमें गर्व महसूस करने का अवसर प्राप्त करते हैं। हिंदी, संस्कृत और अन्य भाषाओं में प्रसिद्ध साहित्यकारों की रचनाएँ भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। यह साहित्यिक पुस्तकें विद्यार्थियों में साहित्यिक रुचि विकसित करने और उनकी भाषाई क्षमताओं को सुधारने में मदद करती हैं।

गुरुकुल के पुस्तकालय में केवल मुद्रित पुस्तकें ही नहीं, बल्कि डिजिटल संसाधनों का भी व्यापक समावेश किया गया है। यह विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। पुस्तकालय में ई-लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध है, जहाँ विद्यार्थी डिजिटल रूप में पुस्तकों, शोध

पत्रिकाओं, और अन्य शैक्षणिक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं। यह सुविधा उन्हें इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न संसाधनों तक पहुँचने का अवसर देती है।

4.9 ध्यान केंद्र स्थल:

भारत उदय गुरुकुल का ध्यान केंद्र स्थल विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास को प्राथमिकता देते हुए स्थापित किया गया है। यह स्थल विद्यार्थियों को न केवल ध्यान और योग के अभ्यास के लिए प्रेरित करता है, बल्कि उन्हें आत्म-जागरूकता, मानसिक शांति और आंतरिक संतुलन की ओर भी मार्गदर्शित करता है। ध्यानकेंद्र स्थल को इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि यह एक शांत, प्राकृतिक और ध्यानपूर्ण वातावरण प्रदान कर सके, जहाँ विद्यार्थी ध्यान, योग और आत्म-चिंतन में मग्न हो सकें।



ध्यान केंद्र स्थल हरे-भरे वातावरण से घिरा हुआ है, जहाँ शांति और ताजगी का अनुभव होता है। पेड़ों और पौधों के बीच यह स्थल प्राकृतिक सौंदर्य का प्रतीक है, जो ध्यान करने के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करता है। ध्यान केंद्र स्थल का निर्माण सादगी और शांति को ध्यान में रखते हुए किया गया है। इसमें अत्यधिक सजावट की बजाय साधारण और पा रंपरिक तत्वों का समावेश किया गया है, जो आंतरिक शांति और ध्यान की भावना को बढ़ावा देते हैं। यहाँ बैठने के लिए कुशासन और योग-मैट की व्यवस्था की गई है। ध्यानकेंद्र स्थल खुला और हवादार है, जहाँ विद्यार्थियों को ताज़ा हवा और प्राकृतिक रोशनी का अनुभव होता है। यहाँ का शांतिपूर्ण वातावरण ध्यान और आत्मचिंतन के लिए उपयुक्त है।

4.10 भोजन व्यवस्था:

साप्ताहिक भोजन आहारिका

दिन	प्रातराश	दोपहर का भोजन	रात्रि भोजन
	प्रातः - 7:15	दोपहर - 12:30	रात्रि - 6:30
सोमवार	इडली, सांभर	चावल, रोटी, सब्जी, कढी, गुड, अचार	रोटी, सब्जी, मूँग दाल,अचार
मंगलवार	मीठा दलिया	चावल, रोटी, सब्जी,अचार अरहर दाल, रायता	रोटी, सब्जी, अचार मसूर दाल (साबुत), लड्डू
बुधवार	चना और मूँग (अंकुरित)	चावल, रोटी, सब्जी,अचार मिक्स दाल, रायता, लड्डू	रोटी, सब्जी,अचार, मसूर दाल
गुरूवार	दही, उपमा	चावल, रोटी, सब्जी, कढी, अचार	रोटी, सब्जी, अचार मूँग दाल (साबुत), गुड
शुक्रवार	हरा पराठा या पूडी	चावल, रोटी, सब्जी,अचार चना दाल, रायता, गुड	रोटी, सब्जी,अचार मसूर दाल
शनिवार	नमकीन दलिया	चावल, रोटी, सब्जी,अचार मसूर दाल, रायता	रोटी, सब्जी,अचार मसूर दाल
रविवार	चना और मूँग (अंकुरित)	विशेष भोजनम्	रोटी, सब्जी,अचार मूँग दाल, लड्डू या खिचड़ी, चटनी,अचार

रात्रि 8:00 बजे दूध

उपलब्धतानुसार सलाद प्राप्त होगी

नोट - उपरोक्त सामग्री मे किसी की उपलब्धता न होने पर परिवर्तन किया जा सकता है

4.11 प्रार्थना स्थल:

भारत उदय गुरुकुल का प्रार्थना स्थल एक महत्वपूर्ण स्थान है, जहाँ विद्यार्थियों और शिक्षकों के दैनिक जीवन की शुरुआत प्रार्थना और आध्यात्मिक गतिविधियों से होती है। यह स्थल विद्यार्थियों को शांति, समर्पण, और आंतरिक शुद्धता की भावना से जोड़ता है, जो उन्हें न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सफल होने के लिए प्रेरित करता है।



प्रार्थना स्थल का डिज़ाइन इस प्रकार किया गया है कि यह विद्यार्थियों को एक आध्यात्मिक और शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करे। यहाँ पर विद्यार्थी सामूहिक रूप से प्रार्थना कर सकते हैं और मानसिक शांति प्राप्त कर सकते हैं। प्रार्थना स्थल को प्राकृतिक वातावरण के बीच स्थित किया गया है, जहाँ शांति और सौम्यता का अनुभव होता है। यहाँ से आसपास के प्राकृतिक दृश्य, जैसे पेड़-पौधे और खुला आकाश, विद्यार्थियों को आध्यात्मिकता और प्रकृति से जोड़ते हैं।

प्रार्थना स्थल विशाल और व्यवस्थित है, जहाँ सभी विद्यार्थी एक साथ एकत्रित होकर प्रार्थना कर सकते हैं। यहाँ बैठने की समुचित व्यवस्था की गई है, ताकि विद्यार्थी ध्यानमग्न होकर प्रार्थना कर सकें। प्रार्थना स्थल की सजावट बहुत ही सादगीपूर्ण और पारंपरिक है। यहाँ दीवारों पर संतों और महापुरुषों के प्रेरणादायक चित्र लगे होते हैं, जो विद्यार्थियों को जीवन के महत्वपूर्ण नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की याद दिलाते हैं।

4.12 खेल स्थल:

गुरुकुल के खेल स्थल को इस तरह से डिज़ाइन किया गया है कि यह विद्यार्थियों की विभिन्न खेलों में रुचि को बढ़ावा दे और शारीरिक गतिविधियों के लिए एक सुरक्षित और अनुकूल वातावरण प्रदान करे। खेल स्थल एक विशाल और हवादार क्षेत्र में फैला हुआ है, जहाँ विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से खेल सकते हैं। यह स्थल प्राकृतिक वातावरण में स्थित है, जो विद्यार्थियों को ताजगी और ऊर्जा प्रदान करता है। विभिन्न खेलों के लिए खेल मैदान को कई हिस्सों में विभाजित किया गया है। फुटबॉल, क्रिकेट, वॉलीबॉल, कबड्डी, और एथलेटिक्स जैसे खेलों के लिए अलग-अलग स्थान निर्धारित किए गए हैं, ताकि हर खेल के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध हो सके।



खेल स्थल पर विद्यार्थियों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा जाता है। मैदानों को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि चोट या दुर्घटना की संभावना कम हो। साथ ही, प्रशिक्षित खेल शिक्षक और चिकित्सीय सुविधाएँ भी हर समय उपलब्ध रहती हैं।

4.13 गुरुकुल छात्रावास:

भारत उदय गुरुकुल का छात्रावास विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक आदर्श निवास स्थान है। यह स्थान विद्यार्थियों को सुरक्षित, अनुशासित और प्रेरणादायक वातावरण में रहने का अवसर प्रदान करता है, जहाँ वे अपने शैक्षिक और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बना सकते हैं। छात्रावास का माहौल विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में सहायक होता है, साथ ही उन्हें स्वावलंबन, अनुशासन और समर्पण का पाठ सिखाता है।

छात्रावास को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और उनकी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है, ताकि वे एक सुविधाजनक और आरामदायक वातावरण में रह सकें। छात्रावास भवन मजबूत और सुरक्षित है, जहाँ विद्यार्थियों की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया है। यहाँ 24x7 सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध है, जिससे विद्यार्थियों को सुरक्षित महसूस होता है। प्रवेश और निकास नियंत्रित हैं, ताकि सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

छात्रावास के कमरे साफ-सुथरे, हवादार और व्यवस्थित हैं। कमरे विद्यार्थियों के लिए आरामदायक बेड, टेबल और कुर्सियों के साथ सज्जित हैं, ताकि वे शांति से पढ़ाई कर सकें और विश्राम कर सकें। एक कमरे में सामान्यतः 2-4 विद्यार्थी रहते हैं, जिससे उनके बीच सामूहिकता और सहयोग की भावना विकसित होती है। छात्रावास में स्वच्छता और स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहाँ नियमित रूप से साफ-सफाई की जाती है, ताकि विद्यार्थियों को एक स्वस्थ वातावरण मिल सके। साथ ही, शुद्ध पेयजल, साफ शौचालय, और स्नानागार की व्यवस्था की गई है।



छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों की दिनचर्या को अनुशासन और नियमों के अनुसार व्यवस्थित किया गया है। यह सुनिश्चित किया जाता है कि विद्यार्थी समय का सदुपयोग करें और एक स्वस्थ जीवनशैली अपनाएँ। छात्रावास में विद्यार्थियों के लिए एक निर्धारित समय-सारिणी होती है, जिसमें उनके जागने, भोजन, पढ़ाई, खेलकूद, और सोने का समय सुनिश्चित किया गया है। यह दिनचर्या उन्हें अनुशासन सिखाने के साथ-साथ समय के महत्व को भी समझने में मदद करती है।

छात्रावास में अनुशासन पर विशेष जोर दिया जाता है। विद्यार्थियों को नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है, जैसे समय पर सोना, भोजन करना, और अध्ययन करना। अनुशासन विद्यार्थियों को जीवन में अनुशासित और जिम्मेदार बनने की दिशा में प्रेरित करता है।

4.14 वेब साइटस:

www.bharatudaygurukul.com

पंचम अध्याय : भारत उदय गुरुकुल की विशेषताएँ

5.1 गुरुकुलम द्वारा “मैकाले -पुत्र” नहीं, “महर्षि-पुत्र” का निर्माण

5.2 निःशुल्क आवासीय शिक्षा

5.3 विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम

5.4 समग्र एवं सर्वांगीण विकास

5.5. गुरुकुल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण

5.6. स्वस्थ्यदायक आहार

5.7. प्रबन्धतंत्र एवं शिक्षकगण

5.8 भारत उदय गुरुकुल की उपलब्धियाँ

पंचम अध्याय

भारत उदय गुरुकुल की विशेषताएँ

5.1 गुरुकुलम द्वारा “मैकाले -पुत्र” नहीं, “महर्षि-पुत्र” का निर्माण

भारत उदय गुरुकुलम की शैक्षिक दृष्टि और उद्देश्य इस मूल सिद्धांत पर आधारित है कि विद्यार्थियों को “मैकाले-पुत्र” नहीं, बल्कि “महर्षि-पुत्र” बनाया जाए। इसका अर्थ है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल पश्चिमी शिक्षा प्रणाली का अनुकरण कर विद्यार्थियों को मात्र एक नौकरी पाने की मशीन बनाना नहीं है, बल्कि उन्हें एक संतुलित, नैतिक, और संस्कृति-प्रधान व्यक्ति बनाना है, जो समाज और राष्ट्र के निर्माण में योगदान दे सके। यह दृष्टिकोण एक समग्र और आध्यात्मिक दृष्टि से शिक्षा को देखता है, जहाँ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो—मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक।

हम मानते है कि इस गुरुकुल मे से प्रशिक्षण प्राप्त करके बाहर आए हुए विद्यार्थी 'मैकाले-पुत्र' नहीं, किन्तु 'महर्षि-पुत्र' बनकर भारत को जगदगुरु बनाने में अपना योगदान करेंगे।

5.2 निःशुल्क आवासीय शिक्षा

निःशुल्क आवासीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समाज के कमजोर वर्गों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और सुविधाएँ प्रदान करना है, ताकि वे अपनी शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक क्षमताओं को पूर्णतः विकसित कर सकें। यह प्रणाली विद्यार्थियों को एक संरक्षित वातावरण में शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ उनके समग्र विकास पर भी ध्यान देती है। निःशुल्क आवासीय शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य सभी बच्चों को शिक्षा के समान अवसर देना है, चाहे उनका आर्थिक या सामाजिक स्तर कुछ भी हो। यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी बच्चा आर्थिक बाधाओं के कारण शिक्षा से वंचित न रहे।

आवासीय शिक्षा के माध्यम से न केवल शैक्षिक ज्ञान दिया जाता है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, सामाजिक, और शारीरिक विकास पर भी ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसके लिए पाठ्यक्रम में सह-पाठ्य गतिविधियाँ, खेल, और नैतिक शिक्षा शामिल की जाती हैं।

निःशुल्क आवासीय शिक्षा का उद्देश्य समाज के उन वर्गों के विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है, जो आर्थिक और सामाजिक कारणों से शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ होते हैं। यह शिक्षा प्रणाली न

केवल शैक्षिक क्षेत्र में समानता को बढ़ावा देती है, बल्कि समाज में समावेशी विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कदम भी है।

निःशुल्क आवासीय शिक्षा में विद्यार्थियों को रहने, खाने, और पढ़ाई के लिए आवश्यक सभी सुविधाएँ दी जाती हैं। यह सुनिश्चित किया जाता है कि विद्यार्थियों को एक सुरक्षित और प्रेरणादायक वातावरण मिले, जहाँ वे अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकें।

विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित और सुव्यवस्थित छात्रावास बनाए जाते हैं, जहाँ वे एक अनुशासित वातावरण में रह सकते हैं। यहाँ की व्यवस्था इस तरह की जाती है कि विद्यार्थियों को घर जैसा महसूस हो और उन्हें शिक्षा में पूरी एकाग्रता बनाए रखने का अवसर मिले।

विद्यार्थियों के लिए नियमित और पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाती है, ताकि उनके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान दिया जा सके। यह सुनिश्चित किया जाता है कि भोजन स्वच्छता और स्वास्थ्य मानकों के अनुरूप हो।

5.3 विद्या, कला एवं कौशल का त्रिवेणी संगम

विद्या, कला और कौशल तीनों मानव जीवन के महत्वपूर्ण आयाम हैं, जो व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और समाज के निर्माण में सहायक होते हैं। यह त्रिवेणी संगम शिक्षा और जीवन का वह आदर्श मॉडल है, जो शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक विकास को संतुलित रूप से आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त करता है। विद्या (ज्ञान), कला (रचनात्मकता), और कौशल (व्यावहारिक क्षमता) जब एक साथ मिलते हैं, तो व्यक्ति न केवल बौद्धिक रूप से सशक्त होता है, बल्कि उसकी रचनात्मकता और व्यावहारिक दक्षता भी विकसित होती है।

विद्या, जो कि ज्ञान की प्राप्ति और बौद्धिक विकास का प्रतीक है, किसी भी समाज के विकास का आधार होती है। विद्या केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को सोचने, समझने और नई दिशा में विचार करने की क्षमता प्रदान करती है।

कला व्यक्ति की रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का प्रतीक है। यह केवल शारीरिक रूप से किसी वस्तु या विचार की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि व्यक्ति की आंतरिक संवेदनाओं और भावनाओं का प्रदर्शन भी

है। कला के विभिन्न रूप जैसे संगीत, नृत्य, चित्रकला, साहित्य, और नाटक, व्यक्ति को अपने भीतर छिपी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का माध्यम प्रदान करते हैं।

कौशल का तात्पर्य व्यक्ति की व्यावहारिक दक्षताओं और क्षमताओं से है, जो उसे वास्तविक जीवन में काम करने और समस्याओं को हल करने के लिए तैयार करती हैं। यह व्यावहारिक ज्ञान का वह रूप है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर और समाज में सशक्त बनाता है। आज के युग में कौशल विकास की महत्ता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, क्योंकि यह रोजगार, उद्यमिता, और समाज के अन्य क्षेत्रों में सफलता के लिए आवश्यक है।

विद्या, कला और कौशल एक-दूसरे के पूरक हैं और जब ये तीनों एक साथ आते हैं, तो व्यक्ति के समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त करते हैं। यह त्रिवेणी संगम जीवन के प्रत्येक पहलू को छूता है और व्यक्ति को जीवन में संतुलन, शांति, और सफलता प्राप्त करने की दिशा में प्रेरित करता है।

विद्या, कला, और कौशल का त्रिवेणी संगम एक संतुलित और समग्र शिक्षा प्रणाली का प्रतीक है, जो व्यक्ति के बौद्धिक, रचनात्मक, और व्यावहारिक विकास को एक साथ लाती है। यह त्रिवेणी न केवल व्यक्ति को जीवन के हर क्षेत्र में सफल बनाती है, बल्कि उसे समाज और राष्ट्र के विकास में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करती है।

5.4 समग्र एवं सर्वांगीण विकास

समग्र एवं सर्वांगीण विकास मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो केवल शैक्षणिक या आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक विकास का समावेश होता है। समग्र विकास का उद्देश्य व्यक्ति को एक सक्षम, जिम्मेदार, और संतुलित नागरिक बनाना है, जो अपने और समाज के लिए सकारात्मक योगदान दे सके।

विद्यार्थियों को इस गुरुकुल तत्वज्ञान, प्रभुभक्ति के संस्कारों के साथ-साथ संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, वैदिक गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, न्यायशास्त्र, नीतिशास्त्र, वस्तुशास्त्र, संगीत-कला (गीत-नृत्य-वादन) अभिनयकला, चित्रकला, हस्तेलखन कला, नामालेखा, आवीजन-प्रबन्ध, योगाभ्यास, इतिहास, भूगोल, कला, कुश्ती आदि सिखायी जाती है।

5.5. गुरुकुल में शिक्षण एवं प्रशिक्षण

वेदशास्त्रों का प्रशिक्षण-श्री राम चरित मानस, श्रीमद्भगवतगीता व अन्य वेदशास्त्रों का ज्ञान कराया जाता है।

खेलकूद का प्रशिक्षण - कैरम बोर्ड, खो खो, कबड्डी आदि खेलों का समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है।

अस्त्र शस्त्र का प्रशिक्षण- तलवारबाजी, धनुष, तीर आदि अन्य शास्त्रों का भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

पशुपालन का प्रशिक्षण - गौपालन, बकरी पालन, भैंस पालन व अन्य पालनों का प्रशिक्षण दिया जाता है।

कृषि का प्रशिक्षण - बागवानी करना, खेती करना आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

संगीत शास्त्र - तबला वादन, हरमोनियम, बांसुरी आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

भाषाएँ - (हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत) आदि की शिक्षा दी जाती है।

कलाएं - कुटीर उद्योग, चाक के द्वारा बर्तन बनाना, घुड़ सवारी, निशानेबाजी आदि सिखाये जाते हैं।

आयुर्वेद - जड़ी-बूटियों का ज्ञान करवाया जाता है।

संगीत कला - विशेष प्रकार के संगीत का प्रशिक्षण दिया जाता है।

शारीरिक कला एवं कौशल - जुड़ों, कराटे आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

इस प्रकार इस 'गरुकुलम्' में शिक्षा-तित्या प्राप्त करके प्रशिक्षित हुए विदयार्थी जीवन का सर्वतोमुखी विकास पाकर इस देश के लिए एक प्रखर राष्ट्र- मुक्त और संस्कृति-भक्त बनकर बाहर आएँगे।

भारतीय पद्धति की सुव्यवस्था

भारत उदय गुरुकुल भारतीय शैक्षिक परंपराओं और पद्धतियों के पुनरुत्थान का प्रतीक है, जिसका उद्देश्य छात्रों को समग्र और सर्वांगीण विकास की दिशा में प्रेरित करना है। यह गुरुकुल प्रणाली भारतीय शिक्षा की प्राचीन धरोहर और आधुनिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन स्थापित करती है, ताकि विद्यार्थियों का नैतिक, शारीरिक, बौद्धिक, और आध्यात्मिक विकास हो सके। भारतीय पद्धति की सुव्यवस्था के अंतर्गत गुरुकुल का संचालन संस्कार, योग्यता, जीवन-कौशल, और सांस्कृतिक जड़ों के समन्वय पर आधारित है।

भारतीय गुरुकुल परंपरा में शिक्षा को केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं रखा जाता था, बल्कि यह जीवन जीने की कला और सामाजिक-आध्यात्मिक विकास का केंद्र थी। गुरुकुल में गुरु और शिष्य का सीधा

संबंध, व्यक्तिगत शिक्षण, और नैतिक शिक्षा पर बल दिया जाता था। भारत उदय गुरुकुल इसी परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनःस्थापित करता है, जिसमें निम्नलिखित विशेषताएँ शामिल हैं:

गुरु-शिष्य परंपरा: यहाँ शिक्षा का आधार गुरु-शिष्य की परंपरा पर है, जहाँ गुरु न केवल शिक्षक होते हैं, बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श भी होते हैं। वे अपने शिष्यों को व्यावहारिक ज्ञान के साथ नैतिकता और संस्कारों की शिक्षा भी देते हैं।

व्यक्तिगत मार्गदर्शन: प्रत्येक छात्र का व्यक्तिगत विकास गुरु के मार्गदर्शन में होता है। छात्रों की मानसिक, शारीरिक, और आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान की जाती है, जिससे उनके व्यक्तिगत गुणों का विकास हो।

5.6. स्वस्थ्यदायक आहार

भारतीय परंपराओं में आहार को जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। आयुर्वेद में आहार को स्वास्थ्य के तीन प्रमुख स्तंभों (आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य) में एक माना गया है। भोजन को शरीर और मन को शुद्ध और स्वस्थ रखने का माध्यम समझा गया है। इस परंपरा को ध्यान में रखते हुए, गुरुकुल में विद्यार्थियों के आहार का विशेष ध्यान रखा जाता है।

संतुलित आहार वह होता है, जिसमें सभी पोषक तत्व (प्रोटीन, विटामिन, खनिज, कार्बोहाइड्रेट, वसा) संतुलित मात्रा में होते हैं। गुरुकुल के छात्रों के आहार में यह सुनिश्चित किया जाता है कि उन्हें सही मात्रा में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, और खनिज प्राप्त हो, ताकि उनका शारीरिक और मानसिक विकास सही ढंग से हो सके।

भारत उदय गुरुकुल शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का भी विशेष ध्यान रखता है। इस दृष्टिकोण में आहार का एक प्रमुख स्थान है, क्योंकि स्वस्थ आहार न केवल शारीरिक विकास के लिए आवश्यक होता है, बल्कि यह मानसिक एकाग्रता और ऊर्जा का स्रोत भी होता है। भारतीय परंपराओं में स्वस्थ आहार के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, भारत उदय गुरुकुल अपने विद्यार्थियों को स्वास्थ्यदायक और संतुलित आहार प्रदान करने पर जोर देता है।

5.7. प्रबन्धतंत्र एवं शिक्षकगण

5.7.1. शिक्षण प्रबंधन

क्र.सं.	नाम	पद
1.	श्री श्याम किशोर मिश्र	अध्यक्ष
2.	श्री कालका प्रसाद गुप्ता	कोषाध्यक्ष
3.	श्री अतुल कुमार	सचिव
4.	श्री राज कुमार	सदस्य
5.	श्री मंगल प्रसाद शुक्ला	उपाध्यक्ष

5.7.2. शिक्षकगण

क्र.सं.	नाम	डिग्री
1.	श्री विक्रम सिंह	B.A., B.Ed.
2.	श्री रामलखन	B.A., B.Ed.
3.	श्री अतुल कुमार	M.Sc.
4.	श्री क्रांति कुमार	B.A.
5.	श्री अतुल त्रिवेदी	M.Sc., B.Ed.

5.8 भारत उदय गुरुकुल की उपलब्धियाँ

- राष्ट्र सेवा मंथन पुरस्कार-2021



- जल चेतना सम्मान-बुंदेली भू-जल चौपाल



- CSIR-IMMT पुरस्कार (उड़ीसा सरकार द्वारा) सम्मानित



- कल्प हमीर महोत्सव 2023 (200 प्रगति-पथ पर अवसर) हमीरपुर



- जल मित्र अनुपम-सम्मान-2019



- 'भारत उदय' प्रकल्प के द्वारा (विश्व का प्रथम जल विश्वविद्यालय बनाना)



- आत्मवाणी वेलफेयर सोसायटी कानपुर द्वारा सम्मानित



षष्टम अध्याय:निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1. निष्कर्ष

6.2. शैक्षणिक उपादेयता

6.3. अध्ययन के सुझाव

6.4. भावी शोध के सुझाव

षष्टम अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव

6.1. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे निम्नवत् हैं-

हमारी वर्तमान शिक्षा पद्धति को सात आततायी या शत्रु बुरी तरह से जकडे हुए हैं- मस्तिष्क, दण्ड, परीक्षा, कुरुप-भवन, अत्यधिक कार्य, स्वाभिमान रहित अध्यापक तथा संकुचित मनोवृत्ति के माता-पिता। बेचारे विद्यार्थी को इतनी अधिक पुस्तकें पढ़नी पड़ती है, इतने प्रकार के विषयों का अध्ययन करना पड़ता है कि उसका दिमाक, शरीर और मन सब पिस जाता है। सिवाय पढ़ने और पढ़कर परीक्षा पास करने के वह कुछ और सोच ही नहीं सकता अतः वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार की आवश्यकता है।

अपने भारत देश को परम वैभव के शिखर पर और जगद्‌गुरु के आंसन पर पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए प्राचीन सर्वांगीण भारतीय शिक्षण पद्धति को अपनाना होगा। इसकी जड़ों की सीचना होगा और स्वयं इसकी जड़ो से हमें जुडना होगा।

पश्चिम के विनाशकारी आकर्षण से स्वयं को मुक्त कर उसकी तिलांजलि से भारत की जडों को सींचना और इसकी जड़ों से जुड़ना तो शहादत है। बगैर ऐसी शहादत के कतई नहीं होगा भारत का उदय 200 वर्षों से नष्ट हो चुकी प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्यति का पुनः उदय करने के लिए एक प्रभावशाली विकल्प के रूप में भारत उदय गुरुकुल उभर के सामने आया है।

भारत उदय गुरुकुल में आहार को शिक्षा और जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। यहाँ विद्यार्थियों को ऐसा स्वास्थ्यदायक और संतुलित आहार प्रदान किया जाता है, जो न केवल उनके शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखता है, बल्कि उनके मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में भी सहायक होता है। शुद्ध और सात्विक भोजन, जैविक और मौसमी खाद्य पदार्थों का उपयोग, और अनुशासनपूर्वक भोजन करने की परंपरा के माध्यम से विद्यार्थियों को एक स्वस्थ वातावरण मिलता है, जहाँ वे अपनी शिक्षा और अन्य गतिविधियों में सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सकें।

गुरुकुल में आहार केवल शरीर को पोषण देने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह छात्रों को संतुलित जीवन जीने, प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाए रखने, और अनुशासन का पालन करने की शिक्षा भी देता है। इस प्रकार, भारत उदय गुरुकुल में आहार का प्रबंध शिक्षा के समग्र और सर्वांगीण विकास के मूल्यों को प्रतिबिंबित करता है।

6.2. शैक्षणिक उपादेयता

भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल भारतीय शिक्षा प्रणाली की समृद्ध परंपराओं को पुनर्जीवित करने और आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप विद्यार्थियों का समग्र विकास करने के उद्देश्य से स्थापित की गई है। इसकी शैक्षणिक उपादेयता का आधार केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना है, जो विद्यार्थियों को नैतिक, मानसिक, शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त बनाए। गुरुकुल की शैक्षणिक पद्धति भारतीय परंपराओं, संस्कारों और आधुनिक विज्ञान का सामंजस्य स्थापित करती है। इसकी प्रमुख शैक्षणिक उपादेयता निम्नलिखित हैं:

1. समग्र शिक्षा दृष्टिकोण

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है। यहाँ केवल पुस्तक-आधारित शिक्षा नहीं दी जाती, बल्कि जीवन की सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, और आध्यात्मिक विकास पर जोर दिया जाता है। इसमें शास्त्रों, विज्ञान, और व्यावहारिक कौशलों का संतुलन शामिल होता है।

शारीरिक विकास: खेलकूद, योग, और ध्यान के माध्यम से विद्यार्थियों के शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाता है।

मानसिक विकास: पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों के मस्तिष्क के विकास और बौद्धिक क्षमता को बढ़ावा दिया जाता है।

आध्यात्मिक विकास: ध्यान, योग, और नैतिक शिक्षा के माध्यम से छात्रों का आध्यात्मिक मार्गदर्शन किया जाता है।

2. भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का संवर्धन

गुरुकुल की शैक्षणिक उपादेयता का एक प्रमुख तत्व भारतीय संस्कृति और नैतिक मूल्यों का संरक्षण और संवर्धन है। विद्यार्थियों को भारतीय परंपराओं, संस्कारों, और नैतिकता का पालन करने की शिक्षा दी जाती है। इसके माध्यम से वे अपनी सांस्कृतिक धरोहर को पहचानते हैं और उसका सम्मान करते हैं।

नैतिक शिक्षा: विद्यार्थियों को सत्य, अहिंसा, करुणा, और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों का महत्व सिखाया जाता है, जो उन्हें समाज के लिए जिम्मेदार नागरिक बनाते हैं।

भारतीय परंपराएँ: गुरुकुल में विद्यार्थियों को वेद, उपनिषद, गीता और अन्य शास्त्रों का अध्ययन कराया जाता है, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहें।

3. गुरु-शिष्य परंपरा का पुनरुत्थान

गुरुकुल में गुरु-शिष्य परंपरा का पालन किया जाता है, जहाँ गुरु केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और आदर्श होते हैं। यह परंपरा विद्यार्थियों में अनुशासन, आदर, और समर्पण की भावना विकसित करती है, जिससे वे अपने गुरु के अनुभवों और ज्ञान से सीखते हैं।

व्यक्तिगत मार्गदर्शन: गुरु हर विद्यार्थी के व्यक्तिगत गुणों को पहचानते हैं और उन्हें सही दिशा में प्रेरित करते हैं।

आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण: गुरु अपने शिष्यों के लिए एक आदर्श व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं, जिससे विद्यार्थी उनके गुणों का अनुकरण कर सकें।

4. स्वावलंबन और जीवन-कौशल पर बल

भारत उदय गुरुकुल में विद्यार्थियों को केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक कौशलों की भी शिक्षा दी जाती है। उन्हें स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता के सिद्धांतों पर प्रशिक्षित किया जाता है, ताकि वे जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकें।

व्यावहारिक शिक्षा: कृषि, हस्तकला, और तकनीकी दक्षताओं की शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी जीवन में आत्मनिर्भर बनने के लिए तैयार होते हैं।

स्वावलंबी समाज की ओर अग्रसर: यह शिक्षा विद्यार्थियों को न केवल व्यक्तिगत रूप से सशक्त बनाती है, बल्कि उन्हें समाज और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने में भी मदद करती है।

5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक शिक्षा

गुरुकुल में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का भी समावेश किया गया है, जहाँ विज्ञान, गणित, और तकनीकी शिक्षा पर ध्यान दिया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार तैयार करना है, ताकि वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकें।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी: गुरुकुल में विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को भी प्राथमिकता दी जाती है, जिससे विद्यार्थी नवीनतम तकनीकों और खोजों के साथ कदमताल कर सकें।

व्यावहारिक प्रयोगशाला: विद्यार्थियों को विज्ञान और गणित की प्रयोगशाला में व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिलता है, जो उन्हें सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के बीच संतुलन स्थापित करने में मदद करता है।

6. पर्यावरण के प्रति जागरूकता

गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली में पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। विद्यार्थियों को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने और पर्यावरण की सुरक्षा के महत्व की शिक्षा दी जाती है।

पर्यावरण शिक्षा: विद्यार्थियों को जल संरक्षण, वृक्षारोपण, और स्वच्छता जैसे विषयों पर शिक्षित किया जाता है।

प्रकृति के प्रति सम्मान: गुरुकुल में विद्यार्थियों को प्रकृति के प्रति आदर और संरक्षण की भावना विकसित की जाती है, जिससे वे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझ सकें।

7. योग और ध्यान के माध्यम से मानसिक शांति

गुरुकुल शिक्षा में योग और ध्यान का समावेश विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और एकाग्रता को बढ़ाने के लिए किया गया है। योग और ध्यान के माध्यम से उन्हें मानसिक शांति और आत्म-संयम का अनुभव कराया जाता है, जिससे वे शैक्षणिक और व्यक्तिगत जीवन में बेहतर प्रदर्शन कर सकें।

मानसिक संतुलन: योग और ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी मानसिक संतुलन और शांति प्राप्त करते हैं।

ध्यान केंद्रित करने की क्षमता: ध्यान और योग के नियमित अभ्यास से विद्यार्थियों की ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है, जिससे उनकी शिक्षा में सुधार होता है।

8. समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण का दृष्टिकोण

गुरुकुल शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण की भावना विकसित करना है। विद्यार्थियों को यह सिखाया जाता है कि शिक्षा का अंतिम उद्देश्य समाज और राष्ट्र की सेवा करना है।

समाज के प्रति उत्तरदायित्व: विद्यार्थियों को समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का बोध कराया जाता है, ताकि वे समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

राष्ट्र की उन्नति में योगदान: शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को यह प्रेरणा दी जाती है कि वे राष्ट्र की उन्नति और विकास में योगदान दें।

6.3. अध्ययन के सुझाव

शोध अध्ययन के निष्कर्ष यह स्पष्ट करते है कि वर्तमान शिक्षा पद्धति की स्थिति निम्न है-

- प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के पुनः उदय करने हेतु विशेष शैक्षिक कार्यक्रम बनाया जाना चाहिए साथ ही सभी वर्गों के छात्रों को उसमे सम्मिलित करने हेतु प्रयत्न किया जाना चाहिए।
- गुरुकुलों को आधुनिक शिक्षा संस्थानों के समकक्ष दर्जा मिलना चाहिए।
- आधुनिक शिक्षा संस्थानों में गुरुकुल शिक्षा के तत्व, वैज्ञानिक शिक्षण पद्धति, संस्कारक्षम वातावरण निर्मित करने हेतु व्यक्तिगत तथा संस्थागत स्तर पर कार्य करना चाहिए।
- नवीन गुरुकुलों की स्थापना के लिए, भूमि एवं अन्य संसाधन उपलब्ध कराने वाले दानदाताओं को प्रेरित किया जाना चाहिए।
- गुरुकुल के संचालन में आने वाली प्रशासनिक बाधाओं को न्यूनतम करते हुए समकक्षता आदि सुविधाएं प्रदान करने का मार्ग प्रशस्त करना चाहिए।
- व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास' कर उन्हें समाज एवं राष्ट्रोपयोगी नागरिक बने वाली गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में अपने बालक-बालिकाओं को प्रवेश दिलाने के लिए अभिभावकों को प्रेरित करना चाहिए।

6.4. भावी शोध के सुझाव

समय धन एवं प्रशासनिक कठिनाईयों के करण किसी भी अध्ययन के साथ सभी सम्बन्धित चरों को शामिल कर उन पर विचार नहीं किया जा सकता। अतः कोई भी अध्ययन निश्चित चरों तक सीमित रहता है किन्तु शोध क्षेत्र में और कार्य अन्य शोधार्थियों द्वारा किये जा सकते है ताकि उन चरों सम्बन्धों का अधिक स्पष्ट निरुपण हो सके इसके लिए अग्रांकित कुछ सुझाव प्रस्तुत किये जा रहे हैं-

- भावी अनुसंधान में वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है, जिससे व्यापक परिणाम प्राप्त हो सकें।
- भावी अध्ययन में अन्य गुरुकुलों को सम्मिलित किया जा सकता है।
- भावी अध्ययन बालिका गुरुकुल पर किया जा सकता है।
- भावी शोध में शिक्षा के क्षेत्र' में चल रहे अन्य अभिनव प्रयोगों को सम्मिलित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

रामदास, उच्च शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के व्यक्तित्व एवं विषय सजगता के सन्दर्भ में कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट अनुप्रयोग सम्बन्धी कौशलों का अध्ययन, पी-एच०डी०, शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, 2014.

कुमारी मंजू, मलिन बस्तियों में निवास करने वाले विशिष्ट जाति समूह की लड़कियों का शैक्षिक, व्यावसायिक स्तर तथा उनकी शिक्षा के प्रति अभिभावकों का अभिमत, दयालबाग एजूकेशन इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा, 2005.

मृदुला सिंह (2014) "वैदिक कालीन सभ्यता एवं शिक्षा:वर्तमान मे प्रासंगिकता" पी०एच०डी० शोध प्रबंध वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर http://hdl.net/10603/179223

लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2010-2011. भारत उदय गुरुकुल गुरुकुल द्वारा उपलब्ध गुरुकुल साहित्य।

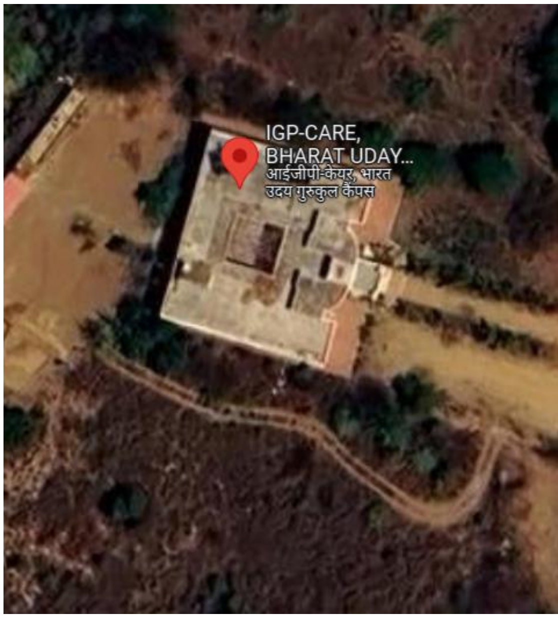
V Meetu (2013)। वैदिक शिक्षा दर्शन में स्त्री शिक्षा का स्वरूप एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता Phd अध्ययन हेतु शोध प्रबंध डॉ राममनोहर लोहिया विश्वविद्यालय फैजाबाद http://handle/10603/228476

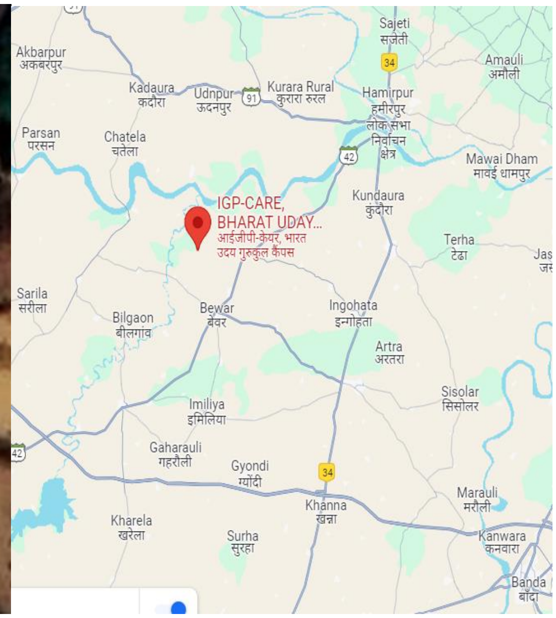
R yadav (2014)। वैदिक शिक्षा के मूल्यों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता D Fil शोध प्रबंध हेतु इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद http://handle.net/10603/25504

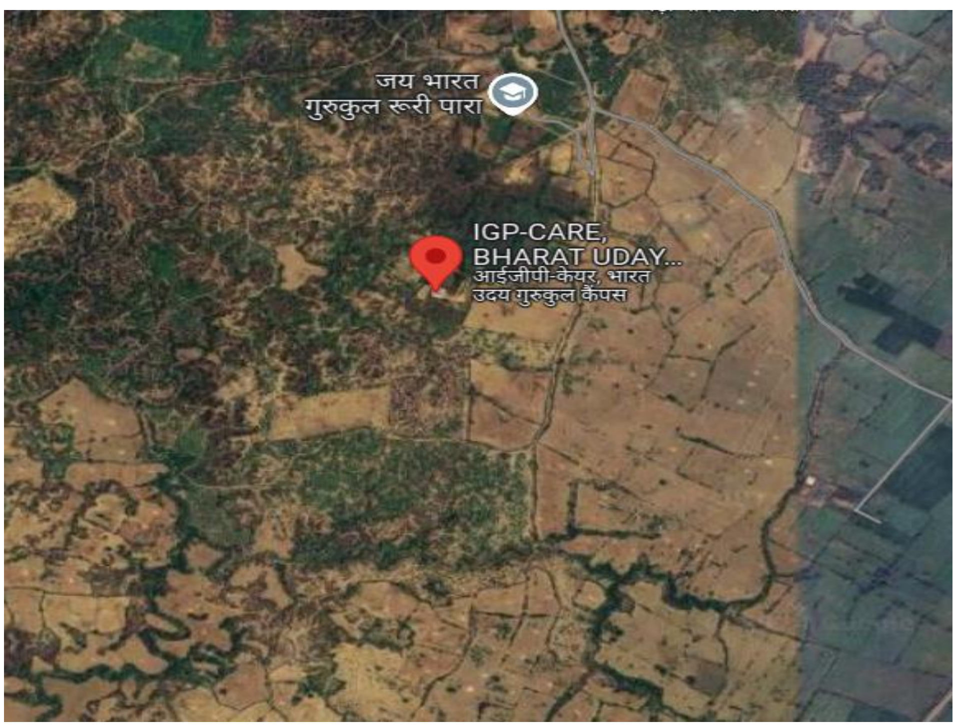
- www.gurukulamshiksha.org
- gurukulamshiksha – youtube

परिशिष्ट –(I)

हमीरपुर मैप



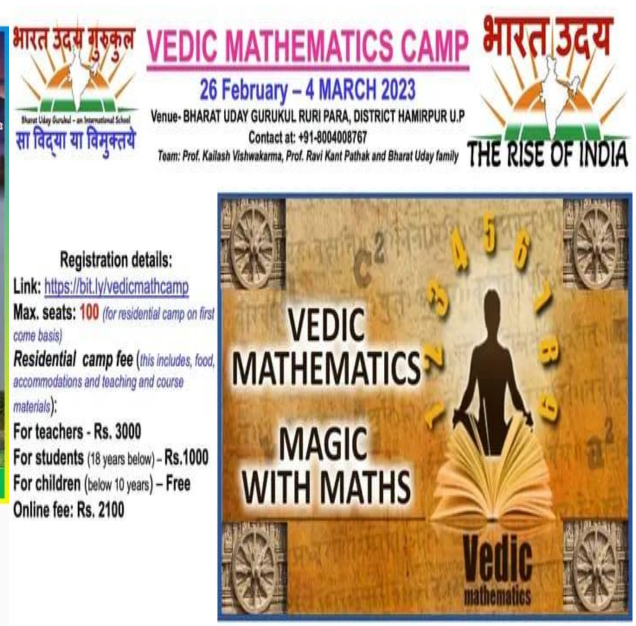




भारत उदय गुरुकुल चित्रावली परिशिष्ट-II







भारत उदय गुरुकुल अवलोकन चित्रावली परिशिष्ट-III









CURRICULUM VITAE



SANGRAM SAHU

Email – sahusangram947@gmail.com

Mob No- 8738919523

Career Objective: To provide our services impartially, confidentially, efficiently and good practice and professional standards.

Qualification	Board/University	Year	Percentage
M.Ed.	Bu Jhansi	2024	Pursuing
B.Ed.	BU Jhansi	2020	64.50%
M.Com.	BU Jhansi	2014	53.50%
B.Com.	Bundelkhand University Jhansi	2012	52.50%
12th	UP Board Allahabad	2009	57.50%
10th	UP Board Allahabad	2007	62.50%

Strength:

- Effective Listener
- Smart Working

Personal Information:

Gender	:	Male
Father's name	:	Mr. Rambahori Sahu
Date of Birth	:	26/02/1993
Martial Status	:	Single
Address	:	Vill-Hanuram Nagar, Post-Bisanda, Tehsil-Atarra, District-Banda, U.P.

Declaration:

I hereby declare that the above written particulars are true to the best of my knowledge.

Date : (Sangram Sahu)

शिक्षा में अभिनव प्रयोग: भारत उदय गुरुकुल का शैक्षिक योगदान

गुरुकुल की भूमि पावन है, ज्ञान का
अनुपम गढ़ है, ध्यान लगाकर जो यहाँ,
वो वीर पुरुष बन जाता है।

हर कदम यहाँ चलता है, शिव के
पदचिन्हों के साथ, सच्चाई का व्रत
लेकर, जीवन को संवारता है।

गुरु का वह आशीर्वाद, अजर-अमर
बना देता है, गुरुकुल की शिक्षा से, वो
संसार को बदल देता है।

मैथिली शरण गुप्त

9 789334 236040

